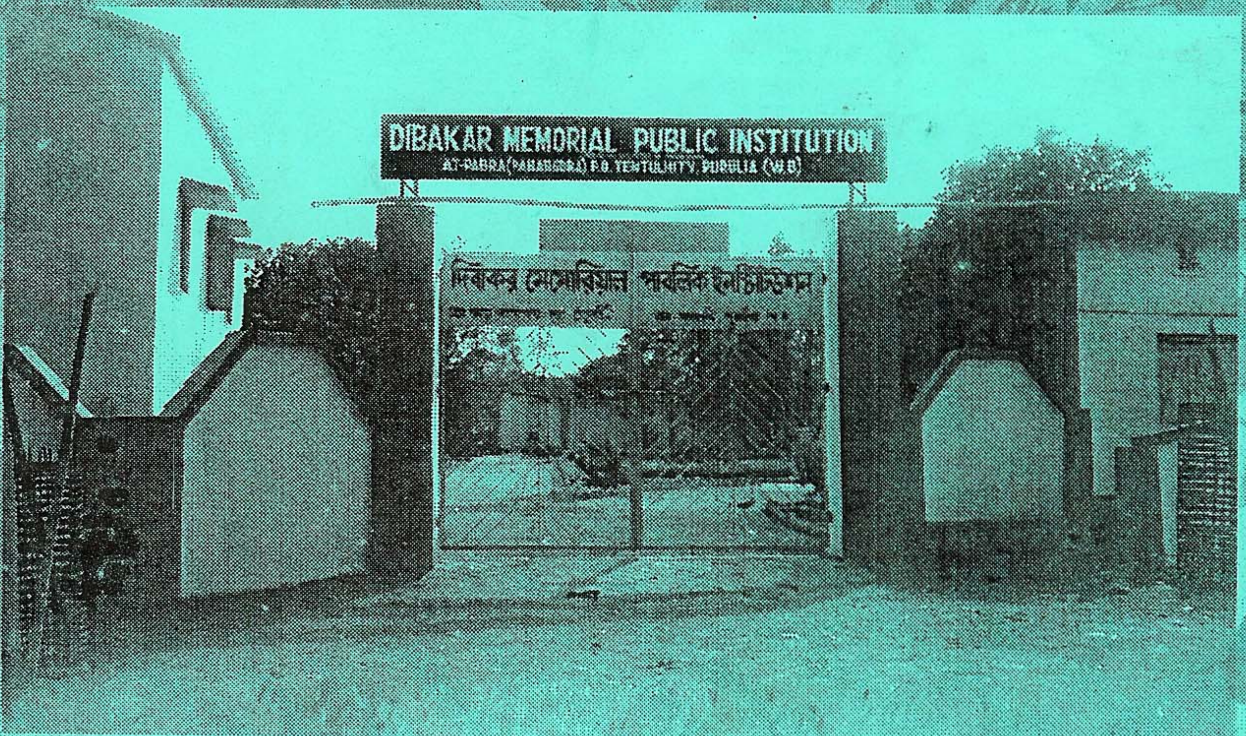

आमिन दिवाकर महतो

1913-1989

मार्च 2017

DIBAKAR MEMORIAL PUBLIC INSTITUTION

आमिन दिवाकर महतो

1913-1989

मार्च 2017

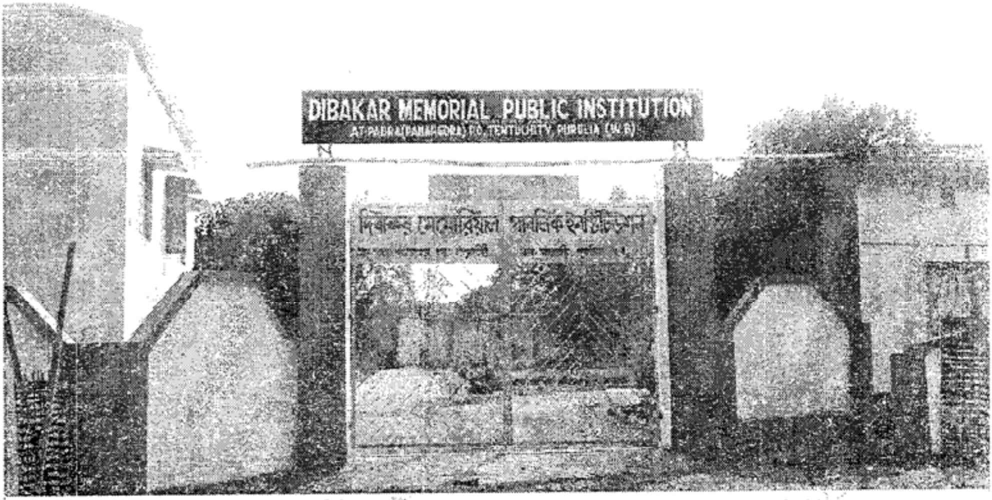
DIBAKAR MEMORIAL PUBLIC INSTITUTION

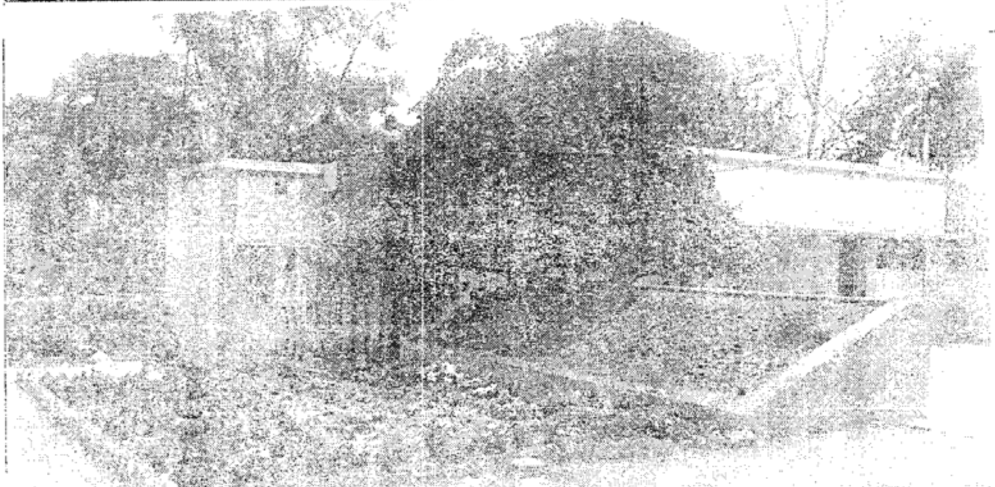

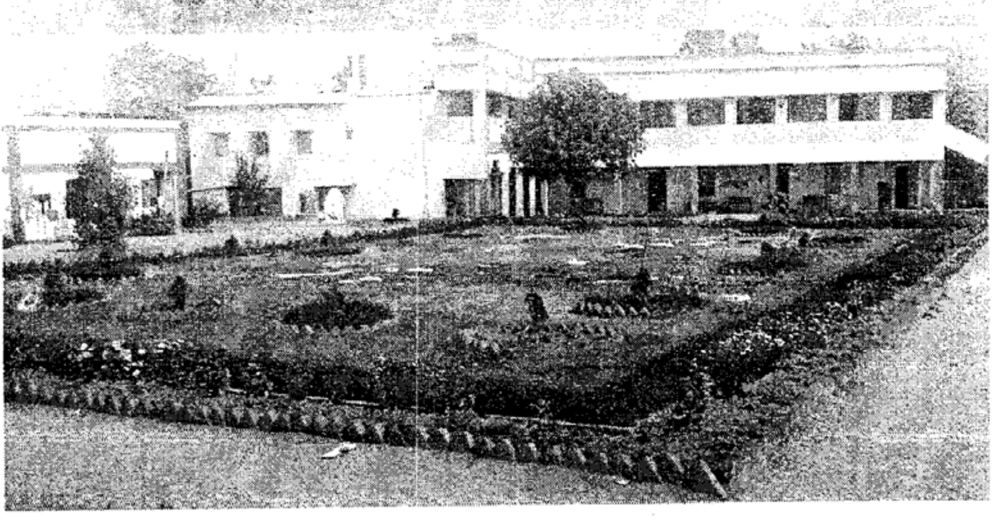

एक टूम

इस किताब में मेरा कोई कृतित्व नही है मेरे पिताजी छो
पाला रचना किए ये जिसमें रामायण से

1. राम जन्म से सीता की विवाह (आयोध्या खण्ड)
2. बाली वध – किस किन्धा काण्ड
3. रावण वध – लंका काण्ड

जो उनके अनुगामी लोगो के पास ये संग्रह नही कर पाये किन्तु म
है। जिसका पिताजी का अपना हाथ का लेखनी बाँगला साल 133
है।

साथ ही वर्त्तमान आधुनिक युग में जो प्रथा विलुप्त
अर्थात एक दिन वरयात्री पार्टी एक विशेष स्थान में ठहरता
बैलगाड़ी से वरयात्री जाता था। दिन में भोजन के समय आज्ञा में
या उसी का कुछ प्रश्न-उत्तर इस किताब में संकलित किए है।
V.D.O / Photo के युग में यह प्रथा विलुप्त हो गया है। इस
झलक कुड़मी समाज के पाठको के लिए देने का चेष्टा किए है।

वंश–पंजीका

मागाराम महतो
↓
विशु महतो
↓
दिवाकर महतो
↓

निरंजन महतो	चित्तरंजन महतो
↓	↓
जनार्दन महतो	पूंणडरीक महतो
↓	
जगबंधु महतो	

आमिन दिवाकर माहातअ

चित्तरंजन महतो (पूत्र)

ठक....ठक.......ठक.........ठक गाँइत कर आवाज सुनिके मितर आँगनाले मोटा आवाजे कहे लागला "कने आइहा रे" असने मोटा आवाज आर कड़ा आवाज सुनिके जेंइ राँधा धारेक गुड़िक चिनहा देइ हेलेक अहे लगटा डरे पाराइ कन पांसेक एक गाछ फेड़े जाइके डाँड़ाइ गेलाक। जारा अहे जमिटा नापि जोखि देंखे लाई डाकअ रहिन अहे लगगिलाव उसने एक गाछ फेड़े जाइके डाड़ाइ देलयिक, चेनमेन (Chain Man) आपन हाँथें चेन लेइके डरे डाँड़ाइ देलेक। नकसा पेनिसिल हाँथे लेइके सामने एक साहसि जुआन छुआ निडर डाड़ाइ रहल अरवरा लागत आमिन दिवाकर माहात।

मोटा आवाजे गरजे हेला अहे मानुसटा जमिदार "गुनु मुखारजि"। अखर गाँव रहेक पुरूलिया जेलाक नडिहा अखरा मुखारजी ब्राहमण आर हुँकाकरे जमिदार हेवएक हँतिर अहे अनचले समे लक पुरा खातिर करथिन, अखारा बहुत प्रतापशाली लक रहत। अखर डरे लक चुपचाप रहत। अखर बिना अनुमतिइ अखर पासे हेडके चलेक साहस काकरअ निहि रहेन। लगे कहत जे अकर परतापे गाछेक पाखि सुधा निहि कहे लागत। अहे समय परतापशली गुनु मुखारजि कर राँधा घारे गाँइत चटावएक बहुत बड़अ दुःसाहस आर कलपनाक काम करला जमिदार मुखारजि कहे लागला. ...."कने गाँइत मारेस रे" डरे काँपते काँपते पासे एक बुड़हा लग कहि उठल्पक- हुजुर हामराई कड़ेरह। आर कहे लागलेन..........कने वहराके अहे जाइगाँइ दाग देवए कहलाहन"। बुड़हाइ फेइर कहि उढलाक आमिन कड़े कहलाक। जमिदारे कहलेक "डाकिहि अके" धोतिं कुरता पिंघल जुआन आमिन कर चेहराँइ कनअ प्रकार डर भय नि देखलेक। एक आत्मविचार आर प्रसन्नता देखा देलेक आर एहे रकम कहिके अकर सामने डाड़ाँइ देलेक। "जमिदार कहलेक नाम कि तोमार ? उत्तर देलेक दिवाकर महतो " घर काँहा? उत्तरं – राँगा

जमिदार कहलेक तँइ आमिन कर पाठ पड़ह लाहिस, परिकरखा देलाहेसिक? आमिने कहे लागलेइक – हँ देला हेइ। "कन जाइगालें परिकखा देलाहेसिक ? उत्तर – कातरास परिप विद्यालय ले।

कतनादिन ले एहे काम करेइहा?

उत्तर– तिन चार बछर हेलि।

यदि हामि कहम तहर नापि मुल आहोन। दिवाकर आमिन कहे लागलाक – तहरा भुल करे पारिहा, मेनतुक हमार विससास आहि, हामर नापि ठिक आहि। तहरा कनअ (Expart) आर जानकारि आमिन आनिके नापेलाई पारिहा। अकर एहे कथा सुनिके जमिदार मुखारजि कहलेक – "जाइएक समय हामर सँगे देखा करिके जाबे।" नापि जोखि करल बादे अकर पास देखा करेलाइ गेलाक। तखन जमिदार अके कहलेक "तहरा ठिक नापलाइहा। अकर तिन हाँथ जिम हामर राँधा घारे बाहरालेक। अखरा कहे लागला, अतना जमि देइ देवन। हामर जानिअ जे अखर जमि हामर राँधा

घार बाहरा ला हेक। जमिदार रिझे अके दहि चुड़ा खाइ देलेक।
एहे सब घटना देखिके गाँवकर आसे पासे नाम मान सममान पुरा प्रचार हेइ लागलेइक। सबाइ अखरा कर बुदधि साहस आर साँचा काम काज देखिके नाम करे लागलेयिन। एसने भालअ मालअ काम पाइट कर हँटिर जिवनकर सेंसतक अख रनाम एखनअ कते आहात। आमिन हिसाबे अहे आसपासेकर अनचले एक गेआनी गुनि मानुस कहिके रहत। 18 आठारअ अनिस बछरले आसि विरासि बछर तक बहुत आत्मविससासि आर पक्षपातहिन काम पाइट करे हेला। पुरूलिया जेलाक पाड़ा, दुबड़ा, लिपानिया आरअ बहुत बहुत जाइगकर जमि जाइंगा समनघे कठिन कठिन समइसाके आपन बुद्धि आर दक्षता देखाइके सहज सरल करिके समाधान करेक क्षमता रहेन। अहे सब अनचले एसन कनअ गाँव नि रहेन जे जाहा अखर चेन नि चलअ रहेन। आज तक अखर परिचय सुधार आमिन कहिके नि जानयिन मेनतुक अखर वेकतितअ आर विससास रहेन।
अखर जनम माझारि कुड़मि परिवारे हेल रहेन। जनम कर किछुदिन बादेइ अखर माइए सेंस निकास छाड़ला। ताकर परेइ अखराकर बापे घुरिके आर एकवार बिहा करला, मेनतुक कतना भाइगअ जे सेइतिन भाँइए पालन पोशन करे लागलेयिन। एहे परिबेसे मानुस हेइके बहुत बड़अ गुनअगान मानुस बलला। गोरा मोटा सोटा एक सासथ सबल देह रहेन। ब्रामहन नि रहत मेनतुक ब्रामहन ले कामे कम बुदधिमान नि रहत। जाकरे दरकार रहेन, बासतु, कुआ, बाँध (तालाव) बिहाक गनएड़ करेक हँतिर अखराके डाकबे करयिन। बहुत गुनंवान मानुस रहत। ब्रामहन गनतकार एसन एसन लगके जनम कुनडलि (कोश्टी) बनावे तेज रहत। ब्रामहन लग अखराके मान सममान देथिन। एतना गुनगान रहल बादे काकरअ संग बहस बाजि आर काकोउ अपमान नि रके हेलथिन। एहे अखर महानताकर परिचय देव देवताकर उपर बहुत भकति सरधा रहेन। सभे लगके अखर बराबर सममान देथिन। एसने एखर सभाव रहेन।
संसकृति प्रेमि दिवाकर माहात पुरूलिया जिलाकर छोनाचे बहुमुल्य अवदान रहेन। आज सभे गाँवे छोनाचे भुखोट (Mask) पिंधिके नाच देखाअत जाइक। गम्भीर सिंह, नेपाल महतो हेनतेन बहुत लग बिदेश जाइके मुखोट बिहीन नाच देखाइके आपन नाम कामाउलाहात। छो नाचे बाहरि देखावटि हेइक, भितरि निहि/इताइ विकृत रूप रहेक आसलि निहि, अहे मुखोट विहिन छोनाचकर रूपकार अभिनेता, काहानिकार रहत दिवाकर महतो, रावण बध, सीता हरण, सीताक बिहा हेनतीन पौराणिक काहनिकार नाटकीय रूप देलरथिक, मुखोट बिहिन नाच अखर समय बहुत सममान आर लोकप्रिय रहता। अकर छोनाच सुधु पुरूलिया जेला किना, धनबाद, जामशेदपुर, मेदनिपुर, बाँकुड़ा हेनतेन जाइगाँइ प्रसंसाक कथा आहेक। अकर सेंस निकास छाड़ल बादेइ मुखोटहिन छोनाच लुप्त हेलेक।

कूड़माली अनूवादः
करूणामयी केसरिआर
(पूत्रवधू)

चितअरंजन माहतअ

पतित पावन महतो
(छोटा भाई)

पुरूलिया जेलाकर पाड़ा थानाक मितर राँगामेइटा गाँवे केशरियार जनम। एकर बापेकर नाम दिवाकर माहतअ आर बड़अ बाप बिशु माहतअ 1348 साले 8th माघ मासे जनम हेल रहेन। 1965 साले पुरूलिया जगन्नाथ किशोर कॉलेज ले बी० ए० आर 1972 साले राँची विश्वविद्यालये बाँगला माहान एम० ए० डीग्री पास करलाहात। 1965 साले कयेक पुआड़ा हाई इस्कूलकर सरकारी शिक्षक हिसाबे करलअ बादे लिपानीया बड़ाशिनी नन्दलाल जुनियर हाई स्कुल कर प्रधान शिक्षक हिसाबे योग युक्त हेला। एखराकर, कर्मनिश्ठ, शिक्षा आर छात्र-छात्रिराकर ऊपर बहुत नजर राखे हेला। 1966 साल ले 1978 सालेकर मार्च मास तक प्रधान शिक्षक कर पदे काज-कर्म करिके सुशिक्षकर नाम आर जन परिचिति अर्जन करल रहता ह। साँउतालडि ताप विद्युत उच्च विद्यालय कर सहकारी शिक्षक आर एकर पासेइ पड़सिया गाँवकर अस्थायी बासिन्दा रहत। समाज संस्कृति आर राजनीति एखर बहुत अवदान आहेन। कुड़मी माहतअ पाड़ा बॉलक शाखा कर सम्पादक रहतअ। 1978 ले 2003 तक साँउतालडि तापअ विद्युत उच्च माध्यमिक इस्कुले काम करला। अवसर हेवेक बादे इहाँक मानुसेक लागि इस्कुल गढ़ाक सवप्नअ मने आवलेक सेइ खातिर आज "दिवाकर मेमोरियल पाब्लिक" इन्सटुटसन शुरू करलाक। जमीन किनी के सेवा निवृति पावल सभे टाका लागाय देलेइक। ओहेटाकर आज प्रतिफलन देखअहे। किन्तु भाग्येक विडम्बना देखेअ 2012 साले दुरारोग्य बेधि धरलेक। भेलोर हास्पाताले चिकित्सा कराइके ठीक हेइके घार आउला। मेनेक भगवानेक इटा मंजूर नेखलेइक तेञ 2015 सालेक 31 मार्च पुरूलिया सिंहानिया हास्पताले संसारे सभे ममताअ के छाडी के चलि गेला।

मअ दादाक जीवन टाके तीन भागे बाँटलाहे।

1. शिक्षक जीवन :-

बारह बछर प्रधानाध्यापक रहेक समय आपन क्षेत्रे बहु सुनाम अर्जन कर रहय। माञक भाशा कुड़माली रहलेक किन्तु "साँअतालडि ताप विद्युत विद्यालये" सम्पूर्ण बांग्ला भाशी के बावजूद एक योग्य बांग्ला शिक्षक के रूप में आस-पास के क्षेत्र में प्रतिश्ठित कर सके थे। बहु छात्र-छाताएँ शिक्षा प्राप्त कर के अपने को धन्य मानते थे।

2. सामाजिक कार्यत्ता :-

आपन व्यस्तता पूर्ण जीवन के साथ-साथ कुड़मी समाज में भी अपना पहचान बनाए थे। मृत्यु विवाह प्रति ही क्रिया कर्म में उपस्थिति अनिवार्य रहलेक। आज भी समाजेकर पुरा जिला का विभिन्न गाँवो से नामो का चर्चा सुना जाता है।

3. राजनीतिक जीवन :-

चितरंजन माहतो का राजनीतिक जीवन बहुत अल्प 1978 प्रथम त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन में निर्दल प्राथी के रूप में चुनाव मे भाग लिए थे। किन्तु द्वितीय स्थान प्राप्त किये थे। 1983 जातीय काँग्रेस के प्राथी के रूप में पुनः जिला परिशद के प्राथी बने थे। इस बार भी असफलता मिली। इसके बाद राजनैतिक क्षेत्र में ओर सक्रियता नहीं दिखाई दिए।

১৭ শ্রী হরি॥ জোৎপাচের গীতাভিনয়

দ্রৌপদি পাশা॥

১॥ ধৃতরাষ্ট্র নরপতি, পাত্রমিত্র লয়ে যুক্তি, যুবরাজ করিতে করেন অনুমান। কুরু কুলে পুত্র জ্যেষ্ঠ, গুন শ্রেষ্ঠ ধর্ম্মবন্ত, যুধিষ্ঠীর অভিষেক কৈল যৌবরাজ্যে। পাইল পরম প্রীতি মস্তক সমাজে॥

ধৃতরাষ্ট্র। সভাসদগন। কুরু কুলে যুধিষ্ঠীর, দুর্য্যোধনাদি মত পুত্র গন, সকলে বিদ্যায় উত্তীর্ন হইয়াছে, এক্ষনে আমি যুবরাজ করিতে ইচ্ছা করিয়াছি। তোমাদের মনে কি ইচ্ছা হয়॥

সভাসদ। মহারাজ কুরু কুলে জ্যেষ্ঠ পুত্র যুধিষ্ঠীর, সকল গুনে শ্রেষ্ঠ ধর্ম্ম শীল ক্ষমা বন্ত সকলের প্রীয় যুধিষ্ঠীরে যুবরাজ করিতে সকলের মনে ইচ্ছা হইতেছে॥

ধৃতরাষ্ট্র। মন্ত্রিগন। শীঘ্র অভিষেকের আয়োজন কর। দরিদ্র ব্রাহ্মন ভিক্ষুকদিগকে ধন বিতরন কর নগরে যুধিষ্ঠীর যুবরাজের ঘোষনা দাও।

সভাসদ। জয় যুধিষ্ঠীর যুবরাজের জয়॥ (৩)

২॥ যুধিষ্ঠীর যুবরাজ সুখি সর্ব্ব জন। মহারাজ হেথ সাব বাণ্ডুয়ে এক্ষন॥ স্থানে স্থানে বিচার করে ন প্রজাগন॥

৭

প্রজা। প্রজাগন সকলে মিলিয়া হস্তিনা ভুবনে চল যুধিষ্ঠি রে মহারাজ করির। তিনি রাজা হলে সকলের মনে সুক্ষ্ম হয়। ভাই। সত্যের... ন রাজা হলেন না। ধৃতরাষ্ট্র অন্ধ হেতু রাজ পাইলেন না। পুর্ব্বে পান্ডু রাজা ছিলেন। রাজার পুত্রেই রাজ্য পাই এই বিধি আছে। বিশেষতঃ যুধিষ্ঠির রাজার যোগ্য। সত্যবাদি জিতেন্দ্রিয় ধার্ম্মিক সুবুদ্ধি। চল আমরা সকল প্রজা মিলিয়া যুধিষ্ঠিরে রাজা করি॥

প্রজার গান। এস এস এস সবে, এস সবে ভাই। আনন্দে সকলেতে রাজগুন গাই॥ এস সবে প্রজাগন ... হস্তিনা ভুবন, যুধিষ্ঠিরে রাজা করি মিলিয়া সবাই। এ॥ মহারাজ পান্ডু যার তার পুত্র যুধিষ্ঠির রাজপুত্র রাজা হবে আছে এ বিহিত। বিশেষ রাজার যোগ্য ছত্র দন্ড তাহে সভা রূপেগুনে তেজে বির্য্যে সত্য শীলতায়॥ চল চল প্রজা বৃন্দ তারে দিব ছত্র দন্ড, পাত্র মিত্র মিলিয়া সবাই। রাজা হলে হবে সুক্ষ্ম দুরে যাবে সকল দুঃক্ষ, চল চল চল সবে যাব হস্তি নাই॥ ...

৩। যুধিষ্ঠিরে মহারাজা, বাঞ্ছয়ে সকল প্রজা, এ কথা শুনিয়া দুঃক্ষিত দুর্য্যোধন। বিরশ বদনে গেল পিতার সদন॥ মনদুঃক্ষে ধৃতরাষ্ট্রে করে নিবেদন॥

দুর্য্যোধন। পিতা আমার বাক্য অবধান কর। ... প্রজারে মুখে আশ্চর্য্য বাক্য শুনিলাম

(৬)

অবজ্ঞায় অনাদর করিল তোমারে। পতি ইচ্ছা করে
সবে কুন্তির কুমারে॥ এইমত বিচার করয়ে [redacted] চনে।
রাজপুত্র যুধিষ্টির হইবে রাজনে॥ তাহার নন্দন ছেড়ো
হবে সেই রাজা। আমা সবা করিবে আর না গনিবে প্রমা
ধিক আমি ধিক ~~আমি~~ জন্ম ধিক মোর ধর্ম্ম। ধিক
আত্মা ধিক শিক্ষা ধিক দেহকর্ম্ম॥ এ জ্বর চারনে
আর নাহি প্রয়োজনে। তব বিদ্যমান আমি আজি বজাক
অকারনে জন্মে সেই পরভাগ্য দি॥ বিমবাবনে আ
মারে ধরিল এ পৃথিবী॥

ধৃতরাষ্ট্র। রাজা দুর্য্যোধন চিন্তাস্থির করা। শিঘ্র ইহার উপা
য় চিন্তা করি॥

ঐ॥ এখন কি করি ~~কি উপায় করি~~ শ্যাম রাখি না
কুল রাখি। [redacted] ভাই সর্ব্বদা আমার
আজ্ঞা বর্ত্তি। আহি জ্ঞানে কি করিয়া হিংসা করি।
কিন্তু না করিলে দুর্য্যোধন নিশ্চয় আত্মঘাতি হইবে।
যেরূপে আপনার হিত হয় আত্মীয় বৃদ্ধ মন্ত্রীকে
জিজ্ঞাসা করিয়া দেখি॥

৪॥ দুর্য্যোধনে দুঃখিত দেখি অন্ধ নরবর। বৃদ্ধ মন্ত্রি
গনের পায়ে যুক্তি করে সার॥ যেরূপেতে স
দা হিত হয় আপনার॥

(৭)

ধৃতরাষ্ট্র॥ কণিক তুমি আমার পরম বিশ্বাসী। সেইজন্য
তোমাকে ডাকিয়াছি। দিবানিশি আমার হৃদয়ে
নাহি সুখ। তোমার মন্ত্রনা কহ শুনিব যে দুঃখ॥
পাণ্ডবের যশ কীর্ত্তি বাড়ে দিনে দিনে। চিন্তাস্থির
নহে মোর ইহার কারনে। ইহার উপায় আমি [illegible]
শত্রুরা যেন সদা [illegible] হয় আমার॥
কণিক॥ রাজা যদি আমার বাক্য শুন তবে অচিরে তোমার
সুখ হইবে॥
ধৃত॥ মন্ত্রি তোমার বিচারে যে যুক্তি হয় তাহাই আমার দৃঢ়
কর্ত্তব্য॥
কণিক॥ মহারাজ কহি কিছু শুন রাজনীতি পূর্ব্বাপর আছে
যেন শাস্ত্রের বিহিত। কার্য্য না থাকিলে তবু সর্ব্বদা করিবে
দণ্ড। আত্মবশ করিবেক সব রাজ্য খণ্ড। আত্মছিদ্র গোপনই
হবে পরম যতনে। পরছিদ্র পাইলে ধরিবে তক্ষনে॥
করিবেক কার্য্য বুঝিয়া সময়। অনেকস্ত [illegible] অনেক
[illegible] কার্য্য যেন হয়। দুর্ব্বল দেখিয়া শত্রু দয়া নাহি করিবে
শরন লইলে তবু মারিবে বৈরি॥ কাক দেখিয়া শত্রু
[illegible] না করিবে প্রান। কার্য্যে আত্ম রিপু দোঁহে
সমান॥ শত্রুকে কনিষ্ঠ দেখি বলিবে বিনয় আপ
নার [illegible] সহিবে হৃদয়। সদাই থাকিবে
আচ্ছাদন করিয়া সময় পাইলে মারি ভুজঙ্গ
[illegible] জড়াইয়া॥

(১)

বালেক্ষে বুদ্ধিতে যেন মারিবেক বলে। লুব্ধ জনে
ধনা দিয়া মারিবেক ছলে॥ শত্রুরে পাইলে রাজা
কভু না ছাড়িবে। জন্মাইয়া বিশ্বাস [illegible] বিপ
ক্ষেরে মারিবে॥ জানিবে যে শত্রু মম জীবনের বৈরী।
তাহারে মারিবে আনাইয়া দিক বরি॥ বলে ছলে শত্রু
কে পাঠাবে যমদ্বারা। যেনমত আছে রাজা বেদের বিচার
বিশ্বাসিয়া দিব্য করি মারে শত্রু। সবা নাহিক ইহা
তে পাপ কহেন ভার্গব॥ শত্রুরে পালন করি করিয়া
বিশ্বাস। যত্নে রাখিয়ে যথা গর্ভের বিনাশ॥ এসব
বুঝিয়া রাজা করহ উপায়। এ বেনা করিবে রাজা দুঃখ
শেষে দুঃখ পাবে রায়॥

৬॥ দুষ্ট মন্ত্রী শকুনি, কর্ণ, দুর্যোধন, দুঃশাসন যুক্তি
করি যায় তারা অন্ধের সদন। কৌশলে সে পাণ্ডব
গন, নগর বাহির যেন। এই যুক্তি করি নিবেদন হে।
ধৃতরাষ্ট্র নিকটেতে গেল চারি জন॥

শকুনি। মহারাজ উপায় করিয়া পাণ্ডবে বাহির করিয়া
দাও তাহা হলে সকল ভয় দূরে যাবে॥

ধৃতরাষ্ট্র। মন্ত্রিগন। কি মতে বাহির করি পাণ্ডু পুত্রগনে।
যখন আছিল [illegible] পাণ্ডু পৃথিবীতে রাজার
[illegible]রে প্রায় যত্ন করিত সে [illegible]॥

নাম মাত্র রাজা সেই আমি দিলে আয়ু। নিরবধি সমর্পনে
যথা যাহা পায়॥ মম আজ্ঞাবর্ত্তি হইয়াছিল অনুক্ষন॥
তাই হয়ে কারো ভাগ্য নাহবে এমন॥ তাহারে অধিক হয়
তার পুত্রগন॥ আজ্ঞাবর্ত্তি হইয়া মম থাকে অনুক্ষন॥
দেব প্রায় আমারে যে সেবে যুধিষ্ঠির। কোন দোষ দিয়া
তারে করিব বাহির॥ আহি সব জনারে হিংসয়ে যেই জন
অবশ্য তাহার হয় নরকে পতন॥ হিংসা সম পাপ নাহি
জানে সর্ব্ব জনে॥ দয়া বিনা ধর্ম্ম নাহি এ তিন ভুবন॥ বিশেষে
বলিষ্ঠ হয় পঞ্চ সহোদর। তার অনুগত মত আছয়ে কিঙ্ক
র॥ পিতৃ পিতামহ তার পুষ্পিণ সবারে কার শক্তি হয়
বলাৎ বার করিবারে॥
দুর্যোধন। পিতা সেই বাক্য শুনহিলে প্রমান। পুর্ব্বেতে আমি জান
~~...~~ যা করিলা সাবধান॥ যত রাজ্য মধ্যে আছে রাজ্য প্রাপ্তগন
সবারে করিব বশ দিয়া বহু ধন॥ সেবক গনের প্রতি
নাহি কর কঠোর। চিত্তেতে বুঝিয়া কার্য্য কর আপনার॥
এক বাক্য কহি পিতা কর অবধান। আছয়ে অপূর্ব্ব
অতি অনুপম স্থান॥ নগর বারণাবত দেশের বাহি
র। ভ্রাতৃ মাতৃ সহ তথা যাবে যুধিষ্ঠির॥ এথা আ
মি নিজ রাজ্য স্ববশ করিব। এ স্থানে আসিবে পুন
কত দিন গেলে॥

(৩)

[illegible] ধৃতরাষ্ট্র। দিবানিশি আমি তাই চিন্তা করি। কিন্তু পাপ কর্ম্ম বলিয়া প্রকাশ করি না। যদি কোন কার করি সংসারে [illegible] যশ [illegible] হইবে। এমন কৌশল করিয়া উপায় করা যাহাতে নিজে সেচ্ছায় বারনা নগরে যায়।।

৬।। রাজ সভাই বসিয়া আছেন সর্ব্বজনা। প্রসঙ্গে বারনাবত দুর্য্যোধনের পক্ষ মন্ত্রিগন।। শুনি যুধিষ্ঠিরে [illegible] যাইতে হইবে মনা।

মন্ত্রী। নগর বারনাবত অতি পুন্য স্থান। তথা শূলপানি মহেশ্বর নামে অধিষ্ঠান আছেন। শিব রাত্রি চতুর্দ্দশীতে মহা মেলা মধ্যে সব দেবতা গন আসিয়া বাস করেন।।

দ্বিতীয়। সে অতি মনোরম্য স্থান ভুবনে তুলনা দিবার স্থান নাহি।

তৃতীয়। নগর বারনা কেহের নাহিক তুলনা। অমরাবতী তথা তীরে সর্ব্বজনা।। মহাতীর্থ মহা স্থান ভুবন মোহন। নিত্য নিত্য আসি বাস করে যত দেবগন।।

যুধিষ্ঠির। জ্যেষ্ঠ তাত। সকলে বারনাবত উত্তম স্থান বলিয়া প্রসংসা করিতেছে। শুনিয়া আমার বারনাবত দেখিবার ইচ্ছা হয়েছে।।

ধৃতরাষ্ট্র॥ ইচ্ছা যদি হয় তথা করিতে বিহার। সঙ্গে করি
লৈয়া যাহ যত পরিবার॥ জননী সহিত তথা
পঞ্চ সহোদর যথা সুখে বিহরহ বারনানগর॥ ধনরত্ন
সঙ্গে লহ যেই মনে লয়। কিছুদিন থাকিয়া তথা আই
স ফিরিয়া পশ্চা॥

যুধিষ্ঠির॥ আপনার চরণে নমস্কার করি। আমি জননী ও
ভ্রাতৃগণে সঙ্গে লৈয়া বারনাবতে যাই।

৭॥ দুষ্টমতি দুর্য্যোধন, ডাকি আনি পুরোচন, একান্তে তা
রে কহয়ে ~~কথায়~~ বচন। শিঘ্র যাও বারনাবতে, বিনাশি
তে পাণ্ডুসুতে, মো গৃহ ~~জন্ম~~ করহ তাথে অতি অনু
পমা। লক্ষিতে না পারে যেন পুরির নির্ম্মান॥

দুর্য্যোধন॥ পুরোচন। তোমার সমান নাহি মন্ত্রির ভিতরে।
পরম বিশ্বাস তেঁই ডাকি হে তুমারে॥ তোমার স
হিত আমি করিয়ে বিচার। অন্য জন মধ্যে ইহা না হয়
প্রচার॥ নগর বারনাবতে পাণ্ডুপুত্র যায়। তারা না
যাইতে আগে যাইবে তথায়॥ উত্তম করিয়া স্থান করি
য়া আলয়। অগ্নিগৃহ বিরচিবা যেন কেহ না বুঝয়॥ স্তম্ভ
বিরচিবা তাথে পুরু হইবে কুতে। স্থান নিয়োজিয়া
করিবে তাহাতে॥ মধ্যে মধ্যে দিয়া বাঁশ ঝুতে পুন করি
যেই মতে অগ্নি দিলে নিবারিতে নারি॥ এমত রচিবে
তাথে লক্ষিতে না পারে। শানাচিন্ন বিরচিবা যো
না হবে।

জতুগৃহ বেড়িয়া করিবে অস্ত্র জ্বরা। মন্ত্র বিরচিয়া
অস্ত্র রাখিবে ভিতর। যোগুবু হইতে কদাচিত হয় প্রাণ।
অস্ত্রগৃহে অস্ত্র বাড়ি হারাইবে প্রাণ॥ তার চক্র
দিবে তবে খুদিবে গম্ভীর। পোষেমেন পারনাহি
হয় ভামিবার॥ সময় বুঝিয়া অগ্নি দিবেসে আলয়।
এইকত্র আবিখা তবে সমস্ত সমস্যা॥ ধরিতে চলিয়া যাই
লাকের বিপদ। শীঘ্রগতি করাসিয়া গৃহের আর সন্ধ্যা॥

পুরোচন	নমস্কার। এই আমি খচর সংযোগে রথে আ রোপন করিয়া সিদ্ধ যায়॥ —

৬॥ বন্দি যত গুরু জন, জননী সহিত পঞ্চজন, করেন বলে
তারা করিল গমন। অনুসরি কত দূরে বিদুরে
ভাষায় তারে। সুরিষ্ঠারে যোগৃহের দেন পরি
চয়। সাবধানে থে বেশ তাহে আছে অগ্নিভয়।

বিদুর	মুবিক্কির ইউ ফাইন্ড গ্রাসহপার গোল্ড বারুনা বর্ষ। বার্ট লিভ উইথ ভেরী কেয়ার ফুলি। বর্কজ দেয়ার ইজ মিয়ার অমি খাময়ার। উইবেথ দুয়্যাঁবন গোল্ড ইউ আউট থ্রমাদি কোপিটেপ উইথ ব্লেভারনেস। এও মেড্রাদি মিউয়েল আস মর ইওর্স ডেড।

(১৩)

যুধিষ্ঠির। জ্যেষ্ঠতাত মহাশয় আপনার চরণে প্রনাম করি।
এখন বুঝিলাম দুর্য্যোধন আমাদিগকে প্রকারে
নগর বাহির করিয়াছে। কৃপা করিয়া তুমি অনাথের
প্রতি স্মরন রাখিও।

৯।। পঞ্চ ভাই জননী সাথে, উপস্থিত বারনাবতে, পুরোচ
ন যুধিষ্ঠিরে করে নমস্কার। বলে চল যথা গৃহ
আছে আপনার।।

পুরোচন। নমস্কার। যুবরাজ আপনার গৃহে চলো পূর্ব্ব
হইতে আছে হেথা পুরীর নির্ম্মান। মনোহর দিব্য স্থা
ন স্বর্গের সমান।। কুবের ভাণ্ডার জিনি পুরীর গঠন।
তাদৃশী নাহিক মর্ত্ত্যে শিল্পের মতন।। তব আগমন স্থানে
করিনু মন্ডন। বিলম্ব না কর তুমি দিন শুভক্ষন।।

যুধিষ্ঠির। পুরোচন [illegible] সেই গৃহে চলো যথা সুখে
বিশ্রাম করি।।

১০।। পুরীর মধ্যে গেলেন ছয় জন। যুধিষ্ঠির
বৃকোদরে বলেন বচন। পুরীর নির্ম্মান ভঙ্গি কর
নিরীক্ষন।।

যুধিষ্ঠির। ভাই বৃকোদর গৃহের পরীক্ষা করিয়া
দেখ। আমার মনে গৃহের বিশ্বাস হইতেছে না।

ভীম। ঘরে সর্জ্জরস তৈল ঘৃতের গন্ধ পাইতেছি
অনুমানে বুঝিতেছি ইহা জতুগৃহ।

(১৭)

প্রকারে আমাদের বিনাশহেতু নির্ম্মান করিয়াছে।
পাছে যেসকল অনুচরদেখিলাম্য তাহারাবুঝি এই
সকল দ্রব্য আনিয়াছিল।।

যুধিষ্ঠির। এখন বিদুরের বাক্য প্রমান হইল। আসিবার সময় যাহা যবনভাষে বলিলেন। বিশ্বাস করিয়া এই গৃহে বাস করিলে যখন নিদ্রায় সকলে অচেতন হইব সেই সময় পুরোচন গৃহে আগুন দিবে কহিবে। দুষ্ট দুর্য্যোধন এই যুক্তি করিয়াছে।।

ভীম। নিশ্চয় এই অনলের ঘর। জানিয়া কেন বাস করিব চলপুনঃ হস্তিনায় ফিরিয়া যাই।।

যুধিষ্ঠির। ভাই ইহা সুবিচার নয়। এই কথা লোকে প্রকাশ হইবে। দুর্য্যোধনও মনে করিবে আমার কার্য্য জানিতে পারিয়া ফিরিয়া আইল। তাহে এমন দুর্য্যোধন রণ সবংশে হত্যা করিবে। নিশ্চয় সে যুদ্ধ চাহে বে। বিবাদে কোন কার্য্য নাই। সাবধানে কিছু দিন এই গৃহে বাস করিয়া অন্যস্থানে যাইব।

১১।। জতুগৃহে জন্ম জন মত্ত গৃহে বঞ্চে আর কাল হয়ো সদা অতি চিন্তাকুল মন। হেথা বিদুর চিন্তাকুল, খনকেরে পাঠাইল, যুধিষ্ঠির চরনেতে পড়ি প্রনাম, বলে তব কার্য্য হেতু আমি বিদুর আসিয়াছি। দুর্য্যোধন বল বলে মোরে না করাইনু।।

মনিব। নমস্কার। পাঠাইলা বিদুর আমাকে তব কাছে।
তুমি খনিবার বিদ্যা আমার যে আছে।। একা
শুনে কহিলা মোরে ডাকি নিজ পাশে। দুর্যোধন লোক
বলি না যাবে বিশ্বাস।। অতএব এই চিহ্ন কহিলা আ
মারে। আসিতে কিছু ভাষা কহিল তোমারে।।

যুধিষ্ঠির। জানিলাম তুমি বিদুরের অতি প্রিয়। তাই তোমা
কে পাঠায়েছে। এখন আমাদের ভয় উপস্থিত
হইয়াছে। দুষ্ট দুর্যোধন আমাদের বিনাশ হেতু
জতুগৃহ নির্মাণ করিল। তাহাতে অগ্নি দিয়া বিনাশে
পুরোচন দ্বারে আছে। এই বিপদে যেরূপে উদ্ধার
হয় তুমি শীঘ্র উপায় কর।।

খনক। যুবরাজ চিন্তা করিও না। এই আমি সুড়ঙ্গ
খনন করিয়া দি।।

খনিবার গান। ও ঝুপা ঝোপ ও ঝপা ঝোপ মা মা মা।
এক বমসে মার বম বম, কুর কুর কুর কুরুকে
মাটি খু খু খু খু। এই গর্তের বার দিয়া সুড়ঙ্গ
করিব। ধর্মরাজ রাজার বাবা রাজা যুধিষ্ঠির
কে বাঁচাব। মাটিরে মাটি মাটি হা হা হা। নইলে
মাটি মারি নইলে নাহি ছাড়িব।

(৮৩)

প্রজাগন। হে যুঁবাকাকাঙ্ক্ষসারো।
খনকা। আমরা নইদের মাঝে।।
যুধিষ্ঠীর। আমাদের এক বৎসর এই স্থানে বাস হইল। দুষ্ট পুরোচন এই মনে করিয়াছে আমার প্রতি তাহা-দের বিশ্বাস হইল। আজ চতুর্দ্দশী দিন দুষ্ট পুরোচন আগুন দিবে তাই আমা খনকের নিকট বিদুর এই বার্ত্তা পাঠায়েছেন।।
ভীম। কদাচ দিবসে এই কর্ম্ম করিতে পারিবে না। রাত্রিতেই দুষ্ট আপনার যত্নে আপনাই ভুগিবে।।
কুন্তী। বাছু দানধ্যান করিয়া কোথায় বনে বনে ভ্রমন করিবে আজ ভোজ করিয়া ব্রাহ্মনে ও দুঃখীগনে আনিয়া ভোজন করাও।।

১ম। হইলো নিমন্ত্রণ, বলো বুকোদর এবে গৃহে আগুন দেবা হইবে। চারিহ সম্ভ্রম সুড়ঙ্গেরে দ্বার, শীঘ্র বাহির হইবে। তবে ~~এ সকল হেরিয়া পাব~~। গোপনেতে পরান রাখিব।।
ভীম। এই সময় দুষ্ট পুরোচন, সমেনে নিদ্রিত হয়েছে এই সুযোগে আমি গৃহে আগুন দি, চলো শীঘ্র সুড়ঙ্গেরে পথে বাহির হও। কোন সুখে গোপনে সবে প্রাণ রাখিবা।।

(15)

প্রতিকামের আক্ষেপ।। ও বাবারে মরি মরি উপায় কি করি। ও মারে ও মরি ও মরি
দারুন আগুনে মরি জ্বলনে, আর সবে জল নিমাও অনল
আমারে আর কষ্ট করি। কাষ্ট করি কাষ্ট করি কষ্টে করি। (ও)
ধুমে হল চক্ষু অন্ধ, উঠে তেল ঘৃতের গন্ধ, এসময় ভাই করি
কি উপায় বিপদ হতে বিপদে তরি। ও মারে ও মারে ও মরি
রে ও বাবারে

৩।। সেণসুড়ঙ্গের পথে গঙ্গার কুলেতে, পান্ডবেরা চিন্তা
কুল হে। তুন কালে এক আই দেনা বিবর, বলে এমসপার
করিব নৌকায় যে বিদুরের লোক আমি শুন মম পারিতে।।

ধীবর।। নমস্কার। আমি বিদুরের আজ্ঞায় তোমাদিগকে পার
করিতে আসিয়াছি। দুর্য্যোধনের [illegible] বলিয়া মনে
করিবে না। আমি বিদুরের পরম বিশ্বাসী তায় আমা
কে পাঠায়েছে। আসিবার সময় মেজ ভাই যতু গৃহের
কথা [illegible] তোমাকে বলিয়াছেন। এই চিহ্ন
আমাকে ~~বলিয়া~~ আসিবার সময় বলিলেন।।

যুধিষ্ঠির। জানিলাম তুমি বিদুরের পরম বিশ্বাসী তায় আমাদের
রক্ষার্থে পাঠাইল। এখন শিঘ্র আমাদিগকে পার
করিয়া দাও। গোপনে কোন স্থানে কাল কাটাইব।।

১৪।। গঙ্গাপার হইয়া, অরণ্যে প্রবেশিয়া, উপায় আহি [illegible]
[illegible] না। পথশ্রমে হইয়া ক্লান্ত, যুধিষ্ঠির দিল [illegible]

১৮

পঞ্চ পুত্র কাছে বিশ্রাম করেন। জলহেতু ভীম যায়। জননী
সহিত চারিভাই। তথায় বটমূলে হইলো নিদ্রাগত ধূলাতে
শয়ন দেখি ভীম হইলো দুঃখিত॥ পথশ্রমে

কুন্তি॥ পুত্রগণ অরণ্য ভিতর বহু দূর আইলাম। পথশ্রমে
পিপাসায় আর চলিতে পারিনা। কিছুক্ষণ এই
স্থানে বিশ্রাম করিয়া সুস্থ হইলে পর অন্যস্থানে যাইব।
যুধিষ্ঠির॥ ভাই বৃকোদর যাও শীঘ্র করিয়া জল আন। জননী
পিপাসায় অত্যন্ত পীড়িত হয়েছেন।
ভীম॥ হায় বিধি কি দুর্ভাগ্য তোমার জননী কুরুকুলে বধূ ভাগিনী।
বিচিত্রবীর্য্যের বধূ, পাণ্ডুর বণিতা। বিচিত্র পালঙ্কেতে
শর মখমলে নিদ্রা যাইতেন। হেন মাতা ধূলাতে শয়ন করিয়া
নের পাতির যোতার ... সামান্য মনুষ্যের ন্যায়
শয়ন করিয়াছেন। বীর শ্রেষ্ঠ অর্জ্জুন, নকুল, সহদেব,
মহাবীর্য্যবন্ত, অতি বুদ্ধিমন্ত, ধর্ম্মপুত্র নরবর হেন ভাই
অরণ্যে ভূমিতে শোয়াইতেছে। কি বংশ প্রাণ, কি আত্মা,
কি বুদ্ধি। কি শক্তি, আজ্ঞাকারে মধ্যে কুরু
কুলে কি শোভা করিব।

১৮॥ নিদ্রা যায় পঞ্চজন বৃক্ষমূলে বাসভীম, নর-দানব হিড়ম্ব
হিড়িম্বার বন, যাবে ভীম শিঘ্র আনিবারে জল
যান॥

17

হিড়িম্বা। হে মহাবীর তুমি কোন জন হও। পরিচয় দাও। এই দেবাকৃ-
তি চারি জন ভূমিতলে নিদ্রা যায় তোমার কে হয়। আর
নিরুপমা নিদ্রাগত সুন্দরী তিনি ইবা কে হয়। এ ঘোর
বনে নির্ভয়ে নিশ্চিন্ত মনে নিদ্রা যাও। জাননা এ রাক্ষ-
সের বন। দুষ্ট দুরাচার [illegible] হিড়িম্ব কি মাংস লোভে
তোমাদিগকে লইয়া যাইতে আদেশ করিয়াছে। আমি তা-
হার ভগিনী। তোমার অঙ্গ হেরিয়া মদনে জর জর করিল
আমি মনে মনে তোমাকে বরণ করিলাম। এক্ষন আদেশ
কর অন্য স্থানে লইয়া যাই।
ভীম। তোর মুখ না দেখি, কিন্তু কদাচার কর বলিস কোন
ভয় যায় রাক্ষসের মুখে দিয়া স্থির লইয়া কৌতুক
করিব এই কারণ সঙ্ক বলিতে শঙ্কা করিস না।
হিড়িম্বা। প্রভু তোমার যে আজ্ঞা। এক্ষন পঞ্চ জনের নিদ্রা ভঙ্গ
কর। পৃষ্ঠে করিয়া শীঘ্র অন্য স্থানে লইয়া যাই। বিল-
ম্ব হইলে আমার ভ্রাতা আসিয়া বিপাকে পাড়িবে।
ভীম। মাতা ভ্রাতৃগণ সুখে নিদ্রা যায়। নিদ্রাভঙ্গ করিব কেন
কোন ছার তোর ভ্রাতা তারে কে ভয় করে। দেবতা গন্ধ-
র্ব যক্ষ রক্ষ আমি কারে ভয় করি না।
হিড়িম্বা। এ দেখ প্রভু দুষ্ট ঘোর শব্দ করিয়া আসিতেছে
এক্ষন অনুমতি দাও সকলে পৃষ্ঠে করিয়া শীঘ্র অন্য
স্থানে লইব।
ভীম। স্থির হও সুন্দরি বসিয়া কৌতুক দেখ। মুহূর্তে দেখে
যম সদনে পাঠাইব। (১৬)

১৬। ভিম হিড়িম্বাতে ব্যক্ত, ক্রোধ হইয়া হিড়িম্বক বলে অগ্রে
তোরে বধ করিব নির্বন্ধ পশ্চাতে এ সবার মাংস করিব ভক্ষন।

হিড়িম্বক। এই তোরে এত ক্ষমা বিশেষ। কিবা তোর দাবানে কুমার
কর্ণে শুনি। মনুষ্য স্থানিতে খোওয়া করিয়াছি পরিপাটি।
মম প্রাণ তোমার দুই গাল সেরনা। মম ভক্ষ্য কাঙ্খাতে
করিলি সেবারনা। এই হেতু অগ্রে তোরে বধিব মতহো
বা। পশ্চাতে এ সব জনে করিব আহার।

ভীম। দুরাচার রাক্ষসারে কি বুঝাব নাই। ভগিনীরে পাঠাই
লি পুরুষের ঠাঁই। তুই পাঠাইলি তবু আইল এ মোহ।
মদনের বশ হইয়া ভজিল আমায়। রাম পত্নী জানিয়া
হইল তোর স্বসা। [illegible] দুষ্ট [illegible] দুরাত্মা
মারিবারে চাহে রে করিস [illegible] এই খানে পাঠাইব
যমের দুয়ার

যুধিষ্ঠির। ভাই বৃকোদর রাক্ষসে ভয় [illegible] না [illegible]
[illegible]। এখানে বিনাশ করিবা আমার সকলে
নিদ্রিত ছিলাম। তোমার রাক্ষসের সহিত বিবাদ
শব্দ শুনিয়া প্রমাদ জানিলাম।

ভীম। কি কারণে সন্দেহ করহ মহাশয়। এই খানে বিনাশিব
রাক্ষস দুর্বৃত্ত পাপী [illegible] ভদ্রজন [illegible]
[illegible] চারে [illegible] মহাশয়। ।৭।

অর্জুন। এতক্ষন বন্ধু ভ্রমি করিলো বিস্তর মারাক্ষসের যুদ্ধ
তব হইল পরিশ্রমা॥ বিশ্রাম করহু তুমি থাকিয়া
অন্তেরো। আমি বিনাশিব ভাই দুষ্ট নিশাচরো।

যুধিষ্ঠির। ভাই এই দেখ নিকটে গ্রাম, লোকে ~~[illegible]~~ এই
কথা জানিলে প্রচার হইবে বিশ্রী অন্য অনাসুনে চলো।

ভীম। সহজে রাক্ষস মাতি নানা মায়া ধরে। ধরিয়া মোহিনী বেশ
ভাণ্ড সব করে॥ আপন স্বভাব কভু ছাড়িতে না পারে।
সময় পাইলে আমা পারে মারিবারে॥ সহজে এ ভাইর বের
শার্দ্দ কার মনে। আমার সংহতি এ চলিল সেকারনে। এক
চড়ে করি তাহারে ভাগ্যের সংহতি। শীঘ্র মাও দুইজনে
মনের বসাতো।

যুধিষ্ঠির। ভাই বৃকোদর এখন নহে বধিষ্ঠা তারা অবধ্যা স্ত্রী মাতি
বন করিবা সংহরা॥ মহাবল হিড়িম্বের বধ করিলে ~
হারা। তোমা বাক্যে থাকে শক্তি আজ্ঞে কি হইবে রা।

হিড়িম্বা। তুমি গুরুত্ব তোমা বই গতি নাই। এই সত্য আশীর্বাদ
করি। কুন্তী মাতা ভয় ত্যজিয়া তোমার
শোন। এখন আমি অনাথা শরণা মাতে। প্রার্থ করি উঠি
নয়। স্ত্রীলোকের মর্ম্ম পীড়া তুমি জান। কৃপা করিয়া
তোমার পুত্রে আমায় ভজিতে আদেশ কর। নতুবা তো
মার [illegible] প্রান ত্যজিব।

যুধিষ্ঠির। বৃকোদর হিড়িম্বা যা বলে সত্য হইল অনাথা নয়া
[illegible] নাগতে প্রান করিতে হয়। কিন্তু দিনে তুমি [illegible]
[illegible] বেতো আমার মধ্যে [illegible]।

১৭। হিড়িম্ব বধ করি সঙ্গেতে মাত্র মান স্থানান্তর, বহু দেশ ভ্রমি
গেল একচক্রা নগর। দ্বিজ গৃহে বাস করি, থাকে ছদ্মবেশ
ধরি, ভিক্ষা করি নিত্য আনে পঞ্চ সহোদর। এইরূপে ব
ঞ্চে তথা, থাকি দ্বিজ ঘর।।

যুধিষ্ঠির। দ্বিজবর আমরা কিছু দিন তোমার গৃহে বাস কর
িব ~~আমাদের স্থান দাও~~। কৃপা করিয়া আমা
দিকে স্থান দাও।

দ্বিজবর। বেশ তোমরা নিরাপদে বাস কর। কিছু ভয় নাই

১৮। ~~একদিনের কথা আচম্বিতে দ্বিজ ঘরে। শোক
রূপে দেখি কুন্তী বলে ব্রাহ্মণেরে। এক পুত্র দিব আ
মি তব উপকারে।~~

১৯। চারিজন ভিক্ষায় গেল, কুন্তী ভীম গৃহে রহিল,
আচম্বিতে দ্বিজগৃহে সবে করয়ে ক্রন্দন। দ্বিজে
দেখি শোকাকুল, কুন্তী অতি চিন্তাকুল, ব্রাহ্মণে
রে কহে গিয়ে সদয় বচন। এক পুত্র দিব আমি
তোমার কারণ।।

ভীম। আজ আমি ভিক্ষায় যাব না তোমরা চারজন
মাত্র নগর হইতে ভিক্ষা করিয়া আন।।

যুধিষ্ঠির। ভিক্ষা দাও। আমরা ভিক্ষা চাই। ভিক্ষাই আ
মাদের জীবিকা।। ২।

ব্রাহ্মন। কিন্তু দৈব্যে, এ বিপদে কে রক্ষা করিবে কোন
উপায় দেখিনা। ব্রাহ্মনি এই জন্য পুর্ব্বে বার
বার বলিয়াছি। কিন্তু আমার বাক্য শুন নাই। রাক্ষসের
রাজ্যে বাস করা উপযুক্ত নয়। কিন্তু পিতা মাতার
স্নেহে আমার বাক্য শুন নাই। এখন কি বিপদ
উপস্থিত উপায় দেখিনা। তুমি নিজ পুত্র কন্যা
পালন করিও আমি রাক্ষসের স্থানে যাই।।

ব্রাহ্মণী। প্রভু কেন চিন্তা কর। আমি তথা যাই, তোমার মত
মতি উচিত নয়। তুমি যাও তবে আমি সহমৃতা হব। পুত্র
কন্যা অনাথ হইবে। যদ্যপি আমি প্রান রাখি। পুত্র
কন্যা পালন করিতে আমার শক্তি নাই। অকুলি
ন কিছু বিনা দিয়া কন্যা বিবাহ করিবে। অথবা
সৎপুত্র ভিক্ষুক হবে। লোকে বলে শাস্ত্রে পত্নী
গ্রহন করে তোমার পুত্র কন্যা উৎপত্তি হয়েছে
স্ত্রীলোকের পরম ধর্ম্ম স্বামী সেবা অতএব আমি
রাক্ষসের নিকটে যাব।।

কন্যা। অনাথের মত কেন দুইজন ক্রন্দন কর। আমার
বাক্য শুন। জননী মাই তাতে মাতৃহীনে বালক মরিবে
সেই জন্য মাতার যাওয়া উচিত নয়। বাহির লিখন কন্যা
[illegible] আপনাকে দান করিতে হয়।।

কুন্তি॥ কান্দ [illegible] চিন্তা করিওনা। ভীমের শরীরে অযুত হস্তি
র বল আছে। পরাজয় করিবে এমন বীর পৃথিবীতে নাই
কারনা বক্তে দেখিয়াছ তুমরা চারি ভাই আমা সহ স্কন্ধে
করিয়া লইল। হিড়িম্ব বিনাশ করি হিড়িম্বা বরিয়াছে।
আমি ভীমের পরাক্রম ভাল করিয়া জানি নিশ্চয় রাক্ষ
স সংহার করিবে। ভয়ে প্রান মহাপুন্য। বিশেষে গো ব্রাহ্মন
নিজের প্রান দিয়া রক্ষা করিতে হয়। ব্রাহ্মন রক্ষা রাজা রক্ষা
আর পৌরুষ ইহাতে দুঃখিত হও কেন॥

যুধি॥ ধন্য তুমি পরদুঃখে দয়ালু হৃদয়। তোমা কিন্তু এহেন বুদ্ধি
অন্যের নাহয়॥ পরপুত্র প্রান হেতু নিজ পুত্র দান।
ব্রাহ্মনেরে এ সঙ্কটে রক্ষন করিলা। তুমার পুন্যে তোমা
তারিবে বিপদে। রাক্ষস মারিবে ভীম তোমার প্রসাদে॥
এক্ষন এক কাব্য মাতা কহ ব্রাহ্মনেরে। এ সব প্রচার যেন
নাহয় অন্যেরে॥

২০॥ মায়ের আজ্ঞাতে, ব্রাহ্মন রাখিতে, বৃকোদর চলিতার
বকা বকা বলি, দিয়া ডাকে গালি। শুনি এলো বক
খাইবার। ভীম সহ রন করিল। বক নিপাতিত হইল
ভিম সহ বনে পাড়িলা।

ভিম॥ রে বকা বকা মামুক চন্দ্র বকা আয় খেয়ে যা।
আয় শীঘ্র আয় তোর জন্য করি খাদ্য এ নীতি চড়
চাপড়, কিল মুষ্টি, পদাঘাত হ্রস্ব কাছি গঙ্গা পার্ছি খে
য়ে যা যমপুরি। শীঘ্র আয় খেয়ে যা।
আয় ২৫

বক] আর সহ্য করিতে পারিনা। বে, বে বার বার গালি দিয়া ডাকে মনুষ্য হইয়া এতগর্ব। জানিনা খবুখুমে ভ্রমন করিব।।

২য়] ~~পাঞ্চাল অধিকার দ্রুপদ কুমারে,~~
পাঞ্চাল অধিপতি, দ্রুপদ নৃপতি, সভাসদগণে মুক্তি করে। দ্রুপদ কুমারী রূপের মাধুরী, করিবেন স্বয়ম্বরে। এই মুক্তি করে নৃপবরে।।

২য়] একচক্রা পুরবাসি এক ব্রাহ্মণ ঘরে। হাঁসিতে মিলে যথা সংখ্যের যথা সুখে বঞ্চে দ্বিজ ঘরে। আচম্বিতে এক আইলো ব্রাহ্মণ। পাঞ্চালের কথা কহে তপোধন। শুনি তথা যেতে ইচ্ছা করে। হেন কালে তথা আইলেন ব্যাস। পাণ্ডবেরে যেতে করেন আদেশ। যাও হে যাও শীঘ্র তথা কারে দ্রুপদ করেন কন্যা স্বয়ম্বরে।।

মুনি] দ্বিজবর তুমি কোথা হইতে আসিতেছ।।

ব্রাহ্মণ] আমি বহু দেশ নদ নদী তীর্থ ভ্রমন করিলাম পাঞ্চাল নগরে দেখিলাম। দ্রুপদ রাজা কন্যা স্বয়ম্বরে আয়োজন করিতেছে। সেই কন্যার যজ্ঞ হইতে জন্ম। রূপে গুণে তুলনা নাই। শুনিয়াছি পৃথিবীর রাজা ~~নিমন্ত্রন করিব~~ স্বয়ম্বরে নিমন্ত্রন করিবেন।।

২৬

এখন রাক্ষসে দিয়া সঙ্কটে প্রান হত। তুমি রাখিবলে
আমার ন্যায় কত কন্যা হবে। আমার পুত্র হইলে পরে
তারিত সম্প্রতি আমি তারিয়া যায়।

বালক। তোরা রাক্ষসে ভয় করিস কেন। আমাকে দেখায়ে
দাও এই বাড়িতে তার প্রান লইব।

কুন্তি। তোমরা কি কারনে ক্রন্দন কর আমাকে বল —
সাধ্য হইলে সঙ্কটে মোচন করি।

ব্রাহ্মন। আমরা যে হেতু ক্রন্দন করি সে সঙ্কটে তারিতে
মনুষ্যের শক্তি নাই। এই নগরে রাজা বক নিশা
চর। তার এই কর নির্দ্ধারিত আছে। পায়স পিষ্টক
অন্ন দুই হাঁড়ি মহিষ এক জন মনুষ্য প্রতি দিন খাইবে
আজ আমার গৃহে পালা কিন্তু মনুষ্য কিনিয়া দিব
এমন ধন নাই। ভার্য্যা পুত্র কন্যা চারি জন আছি
কারে দিব এই ভাবনা করি।

কুন্তি। আমার পাঁচ পুত্র আছে এক পুত্র তোমার রক্ষার্থে
দিব।

ব্রাহ্মন। ভাল বিচার করিয়াছ। অতিথি ব্রাহ্মন আমার
গৃহে বাস কর। নিজের প্রান হেতু অতিথি রাক্ষ
সে দিব কেমন করিয়া দি। আত্মা দিয়া ব্রাহ্মনে
রক্ষা করিলে [illegible] হয় তাই হবে বেদে প্রমান আছে। ব্রাহ্মনে দিয়া
আত্মরক্ষা [illegible] তিন [illegible] ব্রহ্মবধের প্রতিকার না[illegible]
২৩

কুন্তী। দ্বিজ বর ভয় করিও না। আমার পুত্রগন মহাবলবা
না। রাক্ষসে খাইবে মনে করিওনা। আমার সাক্ষাতে
রাক্ষস বিনাশ করিয়াছে। তানর্থ দিতে চাহি বরান
শতপুত্র থাকিলে কোন পুত্রে অনাদর করেনা। নেউ
যে শীঘ্র অন্ন বলির আয়োজন কর।।

ভীম। ভিক্ষা করি গৃহে ফিরি ভাই চারি জনা। ভীমেনা
দেখিয়া মায়ে জিজ্ঞাসে কারন। কোথা গেল
বৃকোদর কহ বিবরন।।

যুধি। মা [illegible]দর কোথা গেল। তুমার আজ্ঞা বিনা নিজের
ইচ্ছায় গিয়াছে।।

কুন্তী। আমার আজ্ঞায় ব্রাহ্মনে ও নগর রক্ষার্থে রাক্ষসের
ঠাঁই গিয়াছে।।

যুধি। মা কোন বুদ্ধি কি সাহসে এ কর্ম্ম করিয়াছ। কোথা
ও শুনি নাই মা হইয়া পুত্রে রাক্ষসের মুখে দেই।
যাহার [illegible] যার বাহুবলে সর্ব্বদা সংকটে
রক্ষা পাই যার শক্তিতে পুনরাজ্য পাব আশা করি
হেনপুত্রে রাক্ষসমুখে দিলে আমরা আর বাঁচিয়া
কি করি। বুঝি তুমিরা দরিদ্র কন্যা রাজার মহিষী [illegible]
নরকে এমিয়া হত বুদ্ধি হইয়াছ।।

~~কুন্তী। চল আমরাও পাঞ্চাল নগরে যাইবে।~~

কুন্তী। এইস্থানে বহুদিন বাস করিলাম, পুত্রেরা আর
ভিক্ষা মাগিতেছেনা। শুনি আজি দ্রুপদ রাজা
বড় দয়াবান চল পাঞ্চাল নগরে যাইব।।

ব্যাস। তুমরা শীঘ্র পাঞ্চাল নগরে যাও। দ্রুপদ রাজা কন্যা
স্বয়ম্বর করিতেছে। পৃথিবীর সমস্ত রাজা স্বয়ম্বরে আ
সিবে। অদ্ভুত লক্ষ্য রচিয়াছে সে লক্ষ্য বিন্ধিতে
কাহারও শক্তি নাই। অর্জুন লক্ষ্য কাটিয়া দ্রুপদ
কুমারি লাভ করিবে।।

২য়। পাঞ্চাল অধিপতি, দ্রুপদ নৃপতি, পাত্র মিত্র
লয়ে যুক্তি করে। দ্রুপদ কুমারি রূপের মাধুরি।
বরিবেন স্বয়ম্বরে। এই যুক্তি করেন নৃপ বরে।।

দ্রুপদ। সভাসদগন ~~[illegible]~~ রাজকুমারি কৃষ্ণা বিবাহের যোগ্য
হয়েছে। পূর্ব্বে ব্যাসদেব বলিয়াছিলেন এই কন্যায়
যোগ্য পাত্র অর্জুন। লোক মুখে শুনি পাণ্ডব যোগৃহে পুড়িয়া মরিল
। কিন্তু মুনিগন বলেন দেবতাইতে পাণ্ডবের জন্ম পৃথি
বীতে অবধ্য। বহুদেশ দুত পাঠাইলাম কোথাও
পাণ্ডবের সংবাদ পাইলাম না। এখন এই কার্য্য করু
পঞ্চ হাত উর্দ্ধে ~~[illegible]~~ লক্ষ্য নির্ম্মান করিয়া স্বয়ম্বরে
পৃথিবীর রাজা নিমন্ত্রন করিয়া আনিব যিনি লক্ষ্য
কাটিয়া পাড়িবেন তিনিই দ্রুপদ লাভ করিবে।

মন্ত্রিগন শীঘ্র স্বয়ম্বরের পুনর্নির্মান কর। রাজগনে নিম
ন্ত্রনপত্র লিক্ষ্য নগরমেরামত করিতে ঝাড়ু দারগনে
আদেশ কর॥

ঝাড়ুদার প্রথম | ভাই আজ রাজপুরে এত লোকের ভীড় দেখছি কেন। কিসের
সাব বলছে নগর সুসজ্জ কর নগর সুসজ্জ কর॥

দ্বিতীয় | জাননা রাজকন্যা দ্রৌপাদির স্বয়ম্বর হবে। স্বয়ম্বরে বড়
বড় রাজা বড় বড় বীর, বড় বড় পন্ডিত আসবে॥

প্রথম | পন্ডিত গুলো কেমন তারা মানুষেই বটে না আমিদের মত

দ্বিতীয় | ওরা মানুষেই বটে নানা বিদ্যা পাঠ করেছে। পন্ডিত বুদ্ধিমান
বুদ্ধিমান লোকে সম্মান করে। তাই বলে স্বদেশে
পুজ্যতে রাজা বিদ্যান সর্বত্র পুজ্যতে॥

প্রথম | হাঁরে ভাই তবে রাজা শ্রীমস্ত হবে তবে হামরা
একবার নাচখেলা করে লিয়াডাকে—

প্রথম | বুঝেছি সুবিধে হলে মুন্সী পড়াশি ছিলে
লেখাপড়া হয় যেই জন লোকে সম্মান করে॥

দ্বিতীয় | দুর শালা হাম্বক, যেত বানরের মত কথা। পন্ডিত
মানুষেই বটে। লেখাপড়া শিখে ওদের জ্ঞানচক্ষু
হয়েছে॥

প্রথম | হাঁরে ভাই জ্ঞান চোখ কোথায় সে চোখ সামনে না
পিছনে থাকে।

দ্বিতীয় | নারে শালা না চক্ষু নয় [illegible] অন্তরে মধ্যে
আছে। (২৮)

তারা বাল্যে কাল হতে লেখাপড়া অভ্যাস করে চক্ষুর জ্ঞান হয়েছো তাই বেদ শাস্ত্র পুরান পাঠ করতে পারে॥

প্রথম| ঐ বুড়োটি বাজারে অন্ধ কানা সুন্দর চক্ষু আমদানি হয়েছে। বোধহয় সেই চোখ বলে॥

দ্বিতীয়| দুর্গামা মূর্খ তোর কিছু বিদ্যে বুদ্ধি নাই সেগুলো মে পাখারের চোখ। দৃষ্টি শক্তি নাই॥

প্রথম| না রে শালা আমি মূর্খ নয়। পাঁচের পিঠে পাঁচ পঁচিশ বৎসর বয়েরপিছেন খন্তিক্ষেমে দুটো পাশ দিয়েছি॥

দ্বিতীয়| তাহলে অনেক দিন পড়েছিস বল দেখি কি কি পাশ দিয়েছিস

প্রথম| [illegible] ডান পাশ আর বাম পাশ না হয় পাশ কি ডপাশ॥

দ্বিতীয়| তাহলে ষষ্ঠাংশ পুরানে পাশ দিয়েছিস

প্রথম| হাঁ ঠিক বলেছিস ষষ্ঠাংশ পুরানেই পাশ দিয়েছি॥

দ্বিতীয়| আচ্ছা তোর ষষ্ঠাংশ পুরানে প্রথম অধ্যায় কি লেখা আছে॥

প্রথম| আঃ ইঃ ইঃ

২৭

দ্বিতীয়| সুশীলা তোর কি কোন রোগ আছে নাকি

প্রথম| নারে মা আমার রোগ নয় স্বর্গপুরানের প্রথম
অধ্যায়তেই ঝাড় বড়ন বাণ্টা লেখা আছে।

দ্বিতীয়| আর বলতে হবেনা তোর বিদ্যের পরিচয় পেয়েছি
আই শিগ্র ঝাড় দে। মহারাজ জেন্তে পারলে পিঠে
ঘেরে মাটি লাগবো

ঝাড়ুদার গান| আই আই আই ভেয়া দুজন মিলিয়া নগর
আই আই আই আই ঝাড় দিয়া চলে জায় ঝাড়ার সময়া।
খবু মহারাজা জবে [illegible] সব বনাই। কেয়া
হর বস্তু মনুষ্য সহর। জোর সে ঝাড় চালাই ভেয়া
বিস কোনা করিবেই ভয়া। নগর ঝাড় দিয়ে পাড়া বাবু
পিয়ে সুখে ভরা পান খিলায়ে রাজা রথ ভুরু ফেরাস
পেশ বাদায়।।

২৩|| পেয়ে নিমন্ত্রন, যত রাজগন, আইলেন স্বয়ম্বরে। যথা যোগ্য
স্থানে, বসে সর্ব্বজনে, সভা করি স্বয়ম্বরে। যত নৃপবরে।।

২৪|| স্বয়ম্বর দেখিবারে আসে ব্রাহ্মনগন। ছদ্ম বেশে
দ্বিজ সঙ্গে গেল পাণ্ডবগন।।

দ্রুপদ| মহারাজগন আমার প্রতিজ্ঞা এই ... লক্ষ্য কাদের
মধ্যে যিনি নির্দিষ্ট লক্ষ্য কাটিতে পারিবেন তিনি
দ্রৌপদী লাভ করিবেন 30

রুক্মাঙ্গদ। অগ্রে আমি বিন্ধিব। অগ্রে আমি বিন্ধিব। অগ্রে আমি বিন্ধিব।

জয়াসিন্ধু। আমি মগধের ঈশ্বর রাজশ্রেষ্ঠ অগ্রে বিন্ধিব॥

দুঃশাসন। আমি হস্তিনার অধিপতি কুরুশ্রেষ্ঠ সর্বমান্য অগ্রে বিন্ধিব।

(বিরাট)

শুশর্মা। (রাজভোগের আশা)
বুড়া কন্যা দেখিয়া কি হতজ্ঞান হয়েছে। শরাসন তুলিবার শক্তি নাই লক্ষ্য বিন্ধিতে চাও। এই মুখে মৎস্যদেশের রাজ্যভোগ কর॥

কর্ণ। আরে দুর্মতি আমার সম্মুখে অগ্রে বিন্ধিতে চাও।

দ্রুপদ। মহারাজগণ। স্বয়ম্বর করিয়া আমি বড় লজ্জা পাইয়াছি। পৃথিবীর রাজগণ স্মরণ করিয়া আনাইলাম কিন্তু কার্য সিদ্ধ হইল না। এখন কি করি অনুমতি দাও॥

জরাসিন্ধু। থাকিতে নারি রাজা তোমার চরিত। কভু নাহি দেখিয়াছি হেন বিপরীত। কোন স্থানে এ মত আছে যে দেখিয়াছ। লক্ষ্য বিন্ধি সবে লইয়া ফিরে কন্যাগণ॥ ঐ দেখ ধনুক কভু না দেখি না শুনি। ধনুর ভারে মূর্ছা হইয়া পড়ে নৃপমণি। বিন্ধিবার কাজ আর শুনাইতে নারি। অধোমুখে বিড়ম্বিত করেছ তুমি॥

৬।

উপহাস করিবারে নৃপতি মণ্ডলে। মিথ্যা স্বয়ম্বর করি
নিমন্ত্রি আনিলে॥ আমা সবা সকে বিন্ধে নাহি হেন জন
কহ বিন্ধিবারে তব ধারে কোন মন॥

ধৃষ্টদ্যুম্ন। এ সভার ভিতর ক্ষত্রিয়ের মধ্যে যেবা লক্ষ্য বিন্ধি
বেন তিনিই দ্রৌপদি লাভ করিবো রাজা মহোদয়
কন্যা ছাড়া ইহাতে বিচার নাই।

রাজা। ক্ষত্রগন যার শক্তি থাকে শীঘ্র উঠ॥ (৩)

ভীষ্ম। আমার প্রতিজ্ঞা সকলে জান। স্বয়ং ত্যাগ করিয়াছি
কন্যাতে আমার কিছু প্রয়োজন নাই। যদ্যপি আমি
লক্ষ্য বিন্ধি কন্যা দুর্যোধনে দিবো (২) অমঙ্গল
দ্রুপদ কুমার শিখণ্ডি সম্মুখে। আমার প্রতিজ্ঞা আছে
অমঙ্গল দেখিলে ধনু শর ত্যাগ করি॥

ধৃষ্টদ্যুম্ন। বুঝি ক্ষত্রগন ধনু দেখিয়াই হতবীর্য হয়েছেন
এখন দ্বিজ ক্ষত্র বৈশ্য শূদ্র যে যাতি হউক না কেন লক্ষ্য বিন্ধি
বেন তিনি দ্রৌপদি লাভ করিবে। যার শক্তি থাকে
শীঘ্র উঠ॥

দ্রোন। দ্রৌপদি আমার মিত্র দুহিতা আমার বিবাহ যোগ্য
নহে। যদ্যপি আমি লক্ষ্য বিন্ধি কন্যা দুর্যোধনে
দিবো॥

[illegible] লক্ষ্যমা

দৃশ্যসপ্ত। এ

মুনি। দ্বিজবরসভাহইতে উঠিয়াতুমিকোথাযাও তুমারকি প্রয়োজন।।

অর্জুন। আমিলক্ষ্য বিন্ধিবারেযায় প্রসন্নহইয়াসকলে অনুমতিদাও।।

মুনি। দ্বিজবর তুমিকন্যা দেখিয়া কি পাগল হয়েছ। যেখানে জরাসন্ধ দুর্য্যোধন বিরাট শুশর্ম্মা শল্য কর্ন ভীষ্মদ্রোন অশত্থমা প্রভৃতি বড়বড় রাজা বড়বড় বীরগন হতবির্য্য হয়েছেন। সেলক্ষ্যবিন্ধিতে চাও। তুমার কর্ম্ম দেখিয়া এগন বলিবে ব্রাহ্মনেরা লোভি হয়েছে। অতএব আশাপরিত্যাগকরিয়া স্থির হইয়া সভাতে বসিয়া থাক।।

দৃশ্য। ন

অর্জুনেরসম্মন

মুনি। দ্বিজবর তুমি কি বাতুল হয়েছ। তুমি নিশ্চয় দ্বিজকুলে মজাইবে। বহুদুর হতে বহু ব্রাহ্মন অর্থ পাবার আসায় আসিয়াছে। কিন্তু তুমার কর্ম্মে পাবার আশা দূরে থাক সভা হইতে খেদাড়িয়া যাওয়াতে তাহাতেও ব্যাঘাত হইবে। ইতি

মুনিদিগের। মুনিগন তুমরা কি কারনে নিবারন করিছ। যার যত শক্তি নিজেই বুঝিতে পারে। যে লক্ষ্য বিন্ধিতে বড় বড় রাজাগন হতবির্য্য হয়েছে। শক্তি না থাকিলে সে লক্ষ্য বিন্ধিতে যাবে কেন।

৩৩

কৃষ্ণ। ঐ

জরাসিন্ধু। হাহা হাহা। অসম্ভব কর্ম্মে দেখি দ্বিজের প্রয়াস। মাগে পরাজয় হইল রাজার সমাজ। সুরাসুর জয়ী সেই ধনুক বিপুল। তাতে লক্ষ্য বিন্ধি করে চালনা ভিক্ষুক। কন্যা দেখি দ্বিজ কিবা উন্মত্ত হইল। বাতুল হইল কিম্বা কার অনুমান। কিম্বা মনে করিয়াছে দেখি একবার পারি লো পা[illegible] ত্রিভুবনে যাবে কি আমার বানী শব্দ ব্রাহ্মণে মোরা না ছাড়িব আর্য্য। উচিত যে শাস্তি হয় দিব তাহার বেলা।

অর্জুন। কোথায় লক্ষ্য কর বান্ধব।।

কৃষ্ণ। পঞ্চ ক্রোশ উর্দ্ধে সুবর্ণ মৎস্য আছে অর্দ্ধ পথে চক্র ঘুরিতেছে। নিম্নে জল পাত্রে চাহিয়া দেখ চক্রছিদ্র পথে মৎস্য চক্ষু দেখিতে পাইবে যদি ঐ মৎস্য চক্ষু কাটি পাড়িতে পার তবে তিনি দ্রৌপদী পাইবেন।।

ব্রাহ্মণগণ। লক্ষ্য বিন্ধিয়াছে (৩) জয় দ্বিজবরের জয় (৩)

জরাসিন্ধু। ব্রাহ্মণগণ স্থির হবেন গোল করবেন [illegible] গোল করিয়াছেন কন্যা পাইবে। ব্রাহ্মণ বলিয়া উপরোধ করা নাহয়ে এক্ষণে দণ্ড দিতাম। পঞ্চ ক্রোশ উর্দ্ধে লক্ষ্য আছে। বিন্ধিল কি না [illegible] বিন্ধন নির্ণয় না জানিয়া বৃথা গোল করিবেন না। যদি শূন্য হইতে মৎস্য কাটিয়া পড়ে তাহলে প্রত্যয় ~~[illegible]~~ হয়।

৩৫

অর্জ্জুন। অকারনে মিথ্যা বলি কর হ ভর্ত্সন। লক্ষ্য কাটি
মেলিব দেখুক সর্ব্ব জন। কতক্ষন জলের তিলক রহে
ভালো। কতক্ষন রহে মিথ্যা শুনোতে মালো।। সর্ব্বকালে
দিবস রজনি নাহি রয়। মিথ্যা মিথ্যা সত্য সত্য লোকে খ্যা
ত হয়।। এ কথার নয় বলি সম্মুখে সবার। যত বার বলিবে
বিন্ধিব তত বার।।

ব্রাহ্মনগন সর্ব্বধ্বনি দিবেন।।

অর্জ্জুন। সুন্দরি এখন আমি তোমাকে বরন করিবনা—

সুভ।। কুসুম মালা দিতে যায়। পার্থ নিষেধিল তায়। দেখি
রাজগন করেন অনুমান। দিল দুত পাঠাইয়া অর্জ্জুনেরে
কহে হাসিয়া। দুত মুখে বাক্য শুনি অর্জ্জুন ক্রোধিত। বলে
যাও হে যাও তথা হয়ে মম দুত।।

দুত। দ্বিজ বর। নৃপতিগন আমাকে তোমার নিকটে পাঠাইলো
রাজা দুর্য্যোধন [illegible] বলিলেন। কহ দেশ কত বড় বাদ্বি
একমাত্র দ্বিজ কন্যা বিবাহ করিবে। আর সভাতে মল্য
পাত্র করিবেন। যদি দ্রৌপদীকে দাও

অর্জ্জুন। ওহে দ্বিজ যেই মত বলিলা বচন। এ কথা কহিয়া
অন্যে বাঁচে কোন জন। অন্য জাতি নহ তুমি অবধ্য
ব্রাহ্মন। সেকারনে মোর ঠাঁই পাইলা জীবন।।

৩৫

আর আমার দূত তুমি কি দোষ তোমরা মম দূত হয়ে তথা
যাহ গন কর্ণা। দুর্য্যোধন আদি যত বন্ধু রাজগনে
অভিলাষ তোসবার থাকে যদি মনে। আমি দিবস সাগরা পৃথিবি জিনিয়া কুবেরের নানা রত্ন দিব ত আনিয়া
তোমা সবাকার জায়া মোরে দেহ আনি। [redacted]
এই কথা সভা সুনে কহিবা আপনি॥

২১॥ দূত মুখে বার্ত্তা শুনি, ক্রোধিত নৃপ[redacted]ন,
ধনু অস্ত্র লয়ে সবে করয়ে গর্জ্জন। আজ দ্বিজে হে আজ
দ্বিজে [redacted]রিব নিধন। দেখি রক্ষা করে কোন জন॥ =

কর্ণ॥ ব্রাহ্মনার বুঝি মতিচ্ছন্ন হয়েছে। তাই রাজগনে
এরূপ কদর্য্য বাক্য বলে। ব্রাহ্মন হয়ে লক্ষ্য
বিদ্ধ করে অহঙ্কার করে। রাজগন, দুষ্ট ব্রাহ্মনে
সমুচিত দন্ড দেওয়া উচিৎ। বিশেষে এ স্বয়ম্বর
ব্রাহ্মনের নয়। ক্ষত্রিয় সমাজে ক্ষত্রিয় কন্যা
ব্রাহ্মনে লবে ক্ষত্র কুলে লজ্জা। দুষ্ট ব্রাহ্মন বালা বধু
উদ্ধার করিবে না —

রাজগন। ব্রাহ্মনে মার (৩)

৮৭ পাঁচালী। বিবাহের আমার

প্রঃ।। সভাতে প্রনাম করি যুড়ি দুইকর উচিত আশিস করে দশের কিঙ্কর।।
উঃ।। সভাতে প্রনাম যদি করিলে আপনি উচিত আশিস মোর দশের কল্যান।।
প্রঃ।। প্রভাতে আইলাম আমি মণ্ডপে নিবেদিতে কেমন বিধান আছে কহ সাক্ষাতে।।
উঃ।। আসেন মণ্ডপে দিগর কোন বিষয় সাক্ষাতে বড়ই সুখেতে আছি আপনার গ্রামে
প্রঃ।। রাত্রিকালে কেবল মাত্র দুয়মন হইল যেমন গঙ্গাপারে ভগীরত প্রণাম হইল। উল্লাস ভূমিতে সব পুছিলাম রজনি বাটির মণ্ডপে কথা কহু দেখি শুনি
উঃ।। কৃপা করির মোরে যদি তল্লাস করিলে বাটীর জাতে মাত্র আছেন কুশলে।। আসি
তদ্যাপি গ্রাম বাসি অত্র পড়শি বন্ধুগন মণ্ডপে আছেন তাই দশের
চরন।। [illegible] ১৩৩৮ সাল তাং ২৮ শ্রাবন শ্রীদিবাকর মাহুত সাং [illegible]

প্রঃ।। উদ্দেশ্য আসিয়াছি তাই মণ্ডপের নিকটে দাও আজ্ঞা যাই ঘর আপনাদের সেবার জন্যেতে।। উঃ।। উদ্দেশ্য আসিলে যদি শ্রীচরনে পারণ নির্দেশি লোক= রাখিবেন রয়ামের মাঝে মঙ্গল্যাক্তি শুধে বিরাবে এক নিতে জ্যেষ্ঠ বড় ভুলনা করিবে কোন মতে।। আজ্ঞা যদি পাইলেন মণ্ডপের নিকটে উপস্থিত আছে

হয় আনিবে সাক্ষাতে ইশ্বরের উপর কত নির্মলা জানি জাগর বাসন পাঠাবে আপনি।। প্রঃ।। কোথা হইতে আইলাম মহাশয় কোথায় তোমার ঘর আপনা রনাম কহ কয় সহোদর, কার সন্তান কার পৌত্র কেবা তোমার পিতা,

তোমার জননি বটে কাহার দুহিতা, জন্মগ্রহন করিয়াছ কোন কুতুমির বাসে জাতিতে কুড়মি বটে কুলে বটে কি।। উঃ।। পশ্চিম হইতে আইলাম আমি রাজীব মহাশয় ঘর শ্রী দিবাকর মাহুত নাম আমার আমি পরমেশ্বর

এ মুকের সোম্বর আমি বিশ্বনাথ মাহুত পিতা আমার জুনিবটে বিদগ্ধ
বর মাহুতের মুদিতা জন্মগ্রহন করিয়াছি গর্ভে বর মাহুতের কি
গোত্রে কুলে কেশ্রিমুর বাটি পারিচয়াদ ।। প্রঃ।। কেমন বা কুশ্রমি তুমরা
কিসের পদ্ধি ধুতি কোন দেবতার পুজা তুমরা করা নিতি ২ কোনদেবতা

পুজ তুমরা কোন দেবতার কর ধ্যান কুশ্রমি বলিয়ে তুমাদেরাকে মুজেছিলাম
উঃ।। উত্তম কুশ্রমি আমারা শুক্ল পারি ধুতি ইষ্টদেবের পুজু আমারো করি
নিতি নিতি ইষ্টদেবে পুজি আমরা ইষ্টদেব করি ধ্যান কুশ্রমি বলিয়ে

আমাদের শিব মুদ্রেছু নাম ।। প্রঃ।। জমন জন্মিলে তুমি এ মাহিমণ্ডলে
অগ্রক্ষ প্রথম কত করেছু সেবামধ্যে মুখ শুদ্ধ নাই মহাশয় জনম
অধাবি মুখ শুদ্ধ কর মহাশয় জিজ্ঞাসিলেমাদ্ ।। ইতি সন ১৩০৮
মাল উঃ ২৭ শ্রাবণ শ্রীযাদবাবকুমার সাং রামপুর

উঃ।। যখন জন্মিলাম আমি এ মাহি মণ্ডলে স্নান করিয়ে শুদ্ধ হইলাম জাহ্নবির জলে
জাহ্নবির জল আনি কেলাম আচমন শ্রীকৃষ্ণ বলিয়ে আমার মুখ শুদ্ধ
প্রঃ।। যখন জন্মিলে তুমি এ মহিমণ্ডলে অগ্রক্ষ প্রথম কত করেছু সেবা মধ্যে কোন
নাম তাজিয়ে ভবাসিন্ধু হলে পার কয়মাস কয়দিন জনম তুমার ।।।।।।

উঃ।। যখন জন্মিলাম আমি এ মণ্ডলে দুগ্ধ পান প্রথম করেছি সেকালে
শ্রীকৃষ্ণ বলিয়ে ভব সিন্ধু হলাম পার দশমাস দশদিন জনম আমার
প্রঃ।। কোথা হইতে আইলে মহাশয় কোথায় তুমার ধাম তুমার দেশের

রাজা তারা কিবা নাম কেবা তুমার মহাপাত্র কার আধিকারে কার
তেজ ধরম মহাশয় কর আজ্ঞা করিয়া।। উঃ।। পশ্চিম হইতে আইলাম
মহাশয় রাঢ়ি মাঠে মুধাম আমার দেশের রাজা শ্রী জ্যোতি প্রকাশ
নাম ব্রহ্মা আমার মহাপাত্র বিষ্ণুর অধিকারি পরমেশ্বরের তেজ ধরি
মহাশয় গুরুর আজ্ঞা কারি ঙ — ইতি সন ৩০ শ্রাবণ ।।।।।

প্রঃ।। কোনজন তুমার গুরু কার হাম চেলা কোনজন তুমার গুরু মাগো দিল
মালা কোন জন তুমার জাতির প্রধান কোনজন তুমার গুরু শুনে গোপনাম
কোনজন তুমার গুরু নাড়ে আর চাড়ে কোনজন তুমার গুরু আত্মা [illegible]
মারে।।

উঃ।। ব্রহ্মা আমার গুরু বিষ্ণুর আমি চেলা [illegible] আমার গুরু গোদিয়া মাটি

কুর্ম্ম আমার গুরু জাতির প্রধান দেবগুরু আমার গুরু শুনে গোপনাম
জিহ্বা আমার গুরু নাড়ে আর চাড়ে নিদ্রা আমার গুরু আত্মা [illegible]

প্রঃ।। কোথা হইতে আইলে মহাশয় কোথায় তুমার ঘর কোন কাড়ের বাশ তুমি
কোন কাড়ের খর কোন রূপে বাড়ি বাড় কোন রূপে যাও কোন রূপে
শুয়ে থাক কোন রূপে যাও।। উঃ।। পাশাম হইতে আইলাম মহাশয়
বায়ু নৈরাকারে মোর ঘর বাম কাড়ের বাশ আমি পিতা [illegible] নারী
বাড়ি বাড়া পুরুষ রূপে যায় [illegible] রূপে শুয়ে থাকি [illegible]
রূপে

প্রঃ।। কোথা হইতে আইলে মহাশয় কোথায় তুমার বাস কেবা তুমার মাতা ছিলেন
কেবা তুমার বাপ কাহার ঔরসে গর্ভে ছিলে দশ মাস।। উঃ।। স্বর্গ হইতে আই
লাম মহাশয় মর্ত্তে আমার বাস লক্ষ্মী আমার ছিলেন বিষ্ণু আমার বাপ
পিতার ঔরসে মাতার গর্ভে ছিলাম দশমাস।। প্রঃ।। কত তুমার ঢাক ঢোল বাজন

বাজনা কোন বৃক্ষের তলে আছে বলহ শুনি।। উঃ।। নিশাদের ঢাক ঢোল নিশাদে
র তুরি চন্দন বৃক্ষের তলে আছি চন্দনে ডাল ধরি।। প্রঃ।। কয় হাত কেশ তুমার
কয় হাত নাড়ি কোন গর্ভে থাক মহাশয় কোন শিশুরে ধরি।। [illegible]

উঃ।। চোদ্দ ভুবনের কেশ আমার সপ্ত ভুবনের নাড়ি জননির গর্ভে থাকি মহাশয়

সাকিন শিয়রে ধরি।। প্রঃ।। কত তুমার পুত্র আছে কত তুমার নাতি কত
তুমার চেলা আছে আর কতেক জাতি ব্রাহ্মণ বৈষ্ণব কতজন
কোন ধরকে যবে মহাশয় বলহু এখন।। [illegible] তাং ৭
আশ্বিন [illegible] মাসে [illegible] সাং [illegible]

উঃ।। পঞ্চ পাণ্ডব পুত্র আমার লক্ষ জননাতি কুঞ্জর আমার সেনা আছে আর
কতেক মুণি ব্রাহ্মন বৈষ্ণব কুটুম্ব জন আমি হয়াছেনা হরে মহাশয়
আন ডাকি পাঁচ সাত আসি।। প্রঃ।। কন্যা দেয়াছে জিনে পানেক মুহে
তে সেই কন্যা দান কেলাম পুনঃ নমস্কার দিয়ে কত কড়ি কতোমত
জিজ্ঞেসে অর্থেতে প্রভাতে আমি তোমা তাহা নিবে দিতে।।
উঃ।। কৃপা করি মোরে যদি করিলে তখন পোষ্য টাকার কন্যা পায়ে মান বস্তু
উল্লাস আর কত বনা দিয়ে অমূল্য রতন বড় সুখে আছি তাহা সদার
চরন।।

প্রঃ।। রজনী প্রভাতে আমি আয়ু লেখা হাতে খাট করি আমি নুয়া
সুশোয়ে মাথা কে বর্টয়ে কোথা করি কুশলে খাবে বয়ান করি সুহাগে
রজনি প্রণায় কমল নয়ে কুসুম কুসুম সজ্জা করি আমি
কোলখাট পার হয়ে অক্ষয় সুখে প্রাম সুখ কথা কহে দেখি শ্রবন করি আমি
কোনদেশে জিলাপুর কোনগ্রামে ধাম মনে করে বলে সে তুমার বিবরনে।।

প্রঃ।। সেকথা জিজ্ঞা সিলে যদি শুন প্রভু বলি বার মাতি নাম ঠাকুর বরাবর আমার
সুখ্যাত খরলয় কাষ্ঠ লের খরখুরে দিয়ে তুমি সেই খানেতে নিয়া গাও
সুমতোম রজনি দিন গিরিস্তু সাধু খাট পার হয়ে আসোছিলু আমি
পূর্বকথা কেলাম আমি শ্রবন কর তুমি জিজ্ঞের দেশে স্মৃতি আমার প্রাণ
মায়াময় ধাম মনে করে প্রভো সিদ্ধি দিবাকর মাসুস্থ নামে।।

প্রঃ।। বেষ্টী মিলে কর্ত্তাগণ তুমরা কুশল কত্রেক কাল ।। উত্তর।। সব মুদ্রা
কর্পূর মাখুলি ঘুড়েছে পান্তাভাত বাগানেব লক্ষ প্রভুর নয়ে সাথে আছি
বসি পড়ে কিনা সন্তে মন মুহেতে অনেক কাল তার সাথে জুড়াবর
মিলো জুলে তাহে লেখা মেলা করে দেন কুশলে কত জুড়ান্য।। ইতি—

হরেকৃষ্ণ হরেকৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ হরে হরে। হরে রাম হরে রাম
রাম রাম হরে হরে। ইতি ১৩৩৮ সাল তারিখ ৭ আশ্বিন—

প্রঃ।। শুন শুন মহাশয় করি নিবেদন শ্রীমুক্ত নাম তব কিসের কারণ
মারিলে শ্রীমুক্ত নাম কেনে নাহি থাকে ইহার কারন কিবা কহিবে আমা...
উঃ।। শুন শুন মহাশয় করি নিবেদন শ্রীমুক্ত নাম তব দেহে মহুজন মারিলে
শ্রীমুক্ত নাম কভু নাহি থাকে সিদ্ধ প্রাপ্ত হলে পরে ঠাকুর বাড়ী থাকে

জননীর গর্ভে যবে জনম নহে।। শ্রীপদ হইতে মহাদেবের বর পাইলে
প্রঃ।। শুন শুন মহাশয় অপূর্ব্ব কাহিনি পূর্ব মুখে শুভ কার্য্য সর্ব্বজন
মানি পশ্চিম মুখেতে কেনে কন্যা দান করে ইহার তাৎপর্য কিবা কহিবে
আমারে।।

উঃ।। তাহার কারন বলি শুন মন দিয়া হিমালয় গৃহে যবে শিব কৈলা বিয়া
সিদ্ধি পানে মত্ত হয়ে মহাদেব গিয়া বিভা হেতু বসিলেন পূর্ব্ব মুখ
দিয়া গৌরী হইতে হইল তায় পশ্চিম মুখে বিয়া।। ইতি ১৩১৮
সাল তাঃ ১০ আশ্বিন লেখক শ্রী দিবাকর মাহাত সাঃ কাটাম...

প্রঃ।। পাথরি তাগিয়ে মহাশয় হইল জগৎ শয় কোন খানে বসি
জিজ্ঞাসহ মহাশয় বসিবার স্থল আগে করা নিরূপন তবে
মোরে জিজ্ঞাসিবে শুজন নন্দন।। উঃ।। বরাহ মুরারি ধরিলেন

নারায়ন সমুদ্র মাঝে পৃথিবিকে করি ধারন গোহ হইতে উর্দ্ধ
তাহে পৃথিবি সর্ব্বজন তাহাতে বসিয়ে জিজ্ঞাসাহ তাহে সুজন
তনয়।। প্রঃ।। যখন না ছিল আয় পাত্থার পবন যখন না ছিল
ব্রহ্মা বিষ্ণু ত্রিলোচন তখন কি রূপে আসি বরাহ হইল বিস্ময়

ভাবনা হইল কিছু নিরাকার।। উঃ।। নিরাকার হইলেন আ
দ্য নিরঞ্জন বর্ষ সহস্র বিজ্ঞায়ে প্রভু তাহায়ে সর্ব্বজন জাগিয়ে ২
প্রভু করিলেন মন নিদ্রা ত্যাজি করি এবে পৃথিবি সৃজনে মন
আমা মোতা করি উপায় না পাইল শোভিতে প্রভুর অঙ্গ॥

কাশিতে লাগিল শ্রেরবি কোম্পানিত হয়ে গোলাকুলে খাম হাতেতে
জন্মিল কন্যা আদ্যাশক্তি নাম জগৎমাতা কাত্যায়নি শক্তিতে
উৎপত্তি তবেকেন হইল শক্তির মহেশ্বরসাত জগৎমাতা কাত্যা
য়নি মহিমা সংসার অতএব লোকে বলে জগৎ সংসার—

প্রঃ।) আকাশ নাড়ী মমন কোথায় ছিল চন্দ্র সুষমনা ছিল মমন
কোথায় ছিল গন্ধ গাভি নাহি ছিল মমন কোথায় ছিল আত্মা
নাড়ী মমন কোথায় ছিল তি।। উঃ।) আকাশ নাড়ী মমন

শিবের কপালে ছি চন্দ্র সুষমনা ছিল মমন পবনে ছিল
গন্ধ গাভি নাহি ছিল মমন শিবের জটাতে ছিল আত্মা
না ছিল মমন বিষ্ণুপদে ছি।। সুতিগন ১৩ ৩৮ সাল তং
১৩ আশ্বিন শ্রীশশিবাবুর মাধুতে সাং বলদামাল্য—

প্রঃ।। শুন শুন ওহে বাম মহতের বাণী দেবলোকে পৃথিবী হইলে
রজস্বলা অশুদ্ধ হইল পৃথি বাগিবে কিমতে শুদ্ধ কর বৈষ্ণ গোষ্ঠী
মহতের শুনতে।। উঃ।। ধন্য২ পৃথিবী গোপতি বৃন্দাবন মনুষ্যরূপে তেহার
চরণ গোবিন্দ সুমেরু সাহিত গণ্ডি আসেন মাহিতলে পৃথিবী হইল

।।প্রঃ।।
শুদ্ধ বিন্দুর গোবরে।। নামজিজ্ঞাসিতে আইলে মহাশয় শ্রীনাম
কহিয়ে শ্রীনামের অগ্রেতে নাম কোন শাস্ত্রে বলে [illegible] হইলে মোর
শুন মহাশয় কহিবে আমার পক্ষ হইয়ে সদয়।। ৪৪৪৪৪৪৪৪৪৪৪৪৪

উঃ।। মমন জন্মিলেন হরি দেবকির উদরে শ্রীপদ পাইলেন বর
মহাদেবের বরে শ্রীপাদ পাইয়া তার হুরামিত মন হর আনন্দে
ভেবে দেখ মে শ্রীহুর্ন।। সুতিগন ১৩ ৩৮ সাল তাং ১৩ আশ্বিন

প্রঃ।। শুন শুন মহাশয় করি নিবেদন বর্ণিলে বিদ্যায় প্রভু আমায়
সবিস্তার পত্রের কথা এখন হইল স্মরণ কোথা হইতে বর্ণ পত্র তাসে
জলের উপরে গলিত না হয় দশ হাজার বৎসরে এবং আশ্চর্য্য কোথা
অদ্ভুত কাহিনি বিস্তারিয়া বল দেখি শুনি।। উঃ।। শুন২ মহাশয়

করি নিবেদন বর্ণপত্রের কোথা আমি বলিতে এখন বর্ণ পত্র তিনিতায়
গোলক ভুবনে প্রভুর আসন মর্ত্তে আনি দিলপবান সেই পত্রে শাসন
করিল নারায়ন জয় গোমে হেরে দেখছে ত্রিভুবন।। ওমুক মাতৃ নাম তব
প্রঃ।।

সর্ব্বলোকের বর্ম নামের উপরে নাম কেমনে না হয় নির্ণয় করিয়া নাম কহ মহাশয়
উঃ।। ওমুক মাতৃ নাম আমার পিতামাতা রাখে নামের উপরে নাম কাজে
তেমনে তবে কেন দর্শন নাম দিতে হবে ... তিনি সেন
মানে অঃ শ্রী আসন শ্রীদিবাকর মাতৃ মাঃ ...

শ্রীহরি ... ৩৩ ...

প্রঃ।। প্রাণ কথা প্রকাশিলে ... নন্দন, বলো দেখি ... পতি বিরুদ্ধ
প্রয়োগ হইল কিসে সবর বান্ধন ... উদ্ভব আদি শাস্ত্রে
সৃষ্টি সিদ্ধির সৃষ্টি বাণী বেদ আর কয়, ... মনি হয়
নিশ্চয়।

উঃ।। অবধানে নিবেদন শুন মহাশয় যথা জ্ঞানে তেহ আমি ... নির্ণয়
একদিন গোলক ভুবনে রাসলীলা ... এককালে বসি সহ সাথে
অসংখ্য প্রভুরা লোকে কেমনে বুঝিতে হরিদরশনে ... করিলেন চিতে
পঞ্চমুখে মুরলীতে করি প্রেম নাম গদগদ চিতে প্রভু সম্মুখে প্রভুর বাস

হর শিঙ্গার রব শুনি দেবর্ষি নারদ হরি হর দরশনে মানস গদগদ
বিনা মন্ত্রে হরিনাম গায়ে মানি মুনি ব্রহ্মলোকে থাকিয়া শুনেন পঞ্চমুখি
হরিপ্রেমে মত্ত হয়ে চতুরানন, গোলক ভুবনে চালাইল পঞ্চানন
শিবের শিবের শিঙ্গার ধ্বনি নারদের বিনা শ্রবণ কেশব অঙ্গ
দিব্য বিধানায়।

গণকে প্রভুর আশে খাম উপাদান সর্ব্বাংশ হইতে খাম শ্রীপদে শ্যামলে
বিষ্ণুপদে [illegible], পাত্র খামবন্দ কথা বলিয়ু মতলেরা
যেন [illegible] ব্রহ্মা কমণ্ডলে ধরি কারনের হেতু হই কারনের জন্য সেথা
স্থানে কাছু আমি গঙ্গারে নিনমু।।

প্রশ্ন। ঐরাবতের স্পর্শ যেমন ইন্দ্রের গমন গঙ্গামু বসন নমে বলির সাক্ষী দিন
অন্ন জলপাত্র আদিনার নামবুদ্ধিতে সকলোদোষ ক্ষমা করিবেন আমাকে
উঃ। তুমিরাজা আমি প্রজা করি নিবেদন গঙ্গামু বসন নামু বলির সাক্ষী দিন
অন্ন জলপাত্র আদি সকলি সমান তুমার কথাতে আমার তুচ্ছ দে

পরান দেখে বাবা বুবলা তুমি সাঁপিলে সন্তানে কৃপা করি ক্ষমা
করিলে নিজগুনে তুমার উপর কত উৎপাত করিলাম কত দাদু
খাটিয়ালি ভাঙিলাম এসব অপরাধ কিছু না করিবে মনে সকলে
দোষ ক্ষমা করিবে নিজগুনে ইতি সন ১৩৩৮ সাল তাং ২০ আশ্বিন

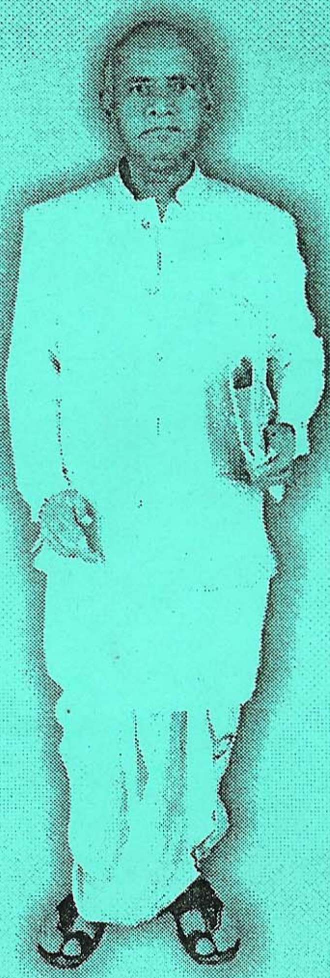

चितरंजन महतो

1943 - 2015

Print By :
Giridhari Computer Print
Barajamua, Barwadda, Dhanbad (Jharkhand)